दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :48 अंक 55 सोमवार 14 सितम्बर 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

सीमा विवाद पर चीन की फिर चालबाजी

नई दिल्ली (आभा)। गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के बीच हुई हिंसक संघर्ष के करीब सात साल बाद चीनी राष्ट्रपति भारत आए थे। अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान यहां उन्होंने ब्रक्स शिखर सम्मेलन में भी भाग लिया। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी द्विपक्षीय बैठक भी हुई। बैठक में सीमा विवाद को सुलझाने पर सहमति बनती दिखी। हालांकि, इसके बाद जब दोनों देशों के द्वारा आधिकारिक बयान जारी किए गए तो उनमें विरोधाभास दिखा।

चीन ने अपने बयान में दोनों देशों से द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने और सीमा से जुड़े मुद्दों का समाधान निकालने का आह्वान किया। ड्रैगन ने कहा कि उन्हें सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति बनाए रखते हुए दोनों मोर्चों पर समानांतर और पारस्परिक रूप से मजबूत प्रगति की तलाश करनी चाहिए। इसका मतलब यह हुआ कि चीन चाहता है कि सीमा विवाद सुलझने का इंतजार किए बिना अन्य क्षेत्रों में संबंध सामान्य किए जाएं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बैठक में इस बात पर जोर दिया कि सीमा पर शांति और स्थिरता द्विपक्षीय संबंधों के निरंतर विकास के लिए एक आवश्यक आधार बनी हुई है। उन्होंने दोनों देशों को सीमा संबंधी मुद्दों पर मौजूदा समझौतों का पालन करने की आवश्यकता पर बल दिया। भारत की तरफ से जारी बयान के अनुसार, दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों और दोनों देशों के लोगों के दीर्घकालिक हितों को ध्यान में रखते हुए सीमा से जुड़े मुद्दों को निष्पक्ष, उचित और पारस्परिक तरीके से हल करने पर प्रतिबद्धता दोहराई। भारत का साफ कहना है कि सीमा संबंधी मौजूदा समझौतों और सहमतियों का पूर्ण पालन किया जाना चाहिए।

दोनों देशों के बयानों को ध्यान से देखों तो एक महीन अंतर दिखता है। चीन चाहता है कि सीमा विवाद को लंबित रखते हुए भी बाकी संबंधों को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। वहीं भारत का रुख 2020 गलवान झड़प के बाद से बिल्कुल साफ है। भारत का कहना है कि जब तक सीमा पर पूर्ण शांति स्थापित नहीं होती और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर स्थिति सामान्य नहीं होती तब तक द्विपक्षीय संबंधों का सामान्य विकास संभव नहीं है। भारत चाहता है कि सीमा शांतिपूर्ण रहनी चाहिए और मौजूदा समझौतों का पालन किया जाना चाहिए।

बैठक के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता के लिए चीन के समर्थन और सम्मेलन की सफलता में उनके योगदान की सराहना की। चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग ने कहा कि दोनों देश एक–दूसरे की ताकत से सीखकर साझा विकास हासिल कर सकते हैं। उन्होंने ब्रिक्स सहयोग को बढ़ाने के लिए साथ चलने का भी आह्वान किया।

नई दिल्ली में आयोजित ब्रिक्स समिट 2026 में हिस्सा लेने के लिए आए चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और पीएम मोदी के बीच में द्विपक्षीय वार्ता हुई है। इस दौरान चीनी राष्ट्रपति ने दोनों देशों के बीच बेहतर संबंधों की वकालत की है।

2029 तक 21 राज्यों में लागू हो जायेगा यूसीसी

नई दिल्ली (आभा)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने रविवार को यूसीसी को लेकर बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहाकि साल 2029 तक एनडीए के शासन वाले 21 राज्यों में समान नागरिक संहिता लागू हो जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर 30 दिन के सेवा संकल्प अभियान का ऐलान करते हुए अमित शाह ने यह बात कही।

उन्होंने कहा कि भाजपा और सहयोगी दल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक देशभर में सेवा संकल्प अभियान चलाएंगे। मुंबई में सेवा संकल्प अभियान को लेकर मीडिया को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि हमने कई राज्यों में समान नागरिक संहिता लागू की है। हम इस बात को लेकर आश्वस्त हैं कि साल 2029 के पहले भाजपा शासित सभी 21 प्रदेशों में समान नागरिक संहिता लागू करने में सफल होंगे।

एक नजर

अंकित ओझा की सफलता पर प्रसन्नता

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बहादुरपुर, (बस्ती)। विकास क्षेत्र बहादुरपुर के ऐलिया गांव निवासी अंकित ओझा ने उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की जूनियर असिस्टेंट परीक्षा उत्तीर्ण कर परिवार के साथ ही गांव और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। अंकित के पिता कृष्णमणि ओझा बस्ती में अधिवक्ता हैं, जबकि माता गृहणी हैं। उनके बड़े भाई डाक विभाग में कार्यरत हैं। गांव में पले–बढ़े अंकित ने प्राथमिक शिक्षा लिटिल फ्लावर स्कूल बस्ती से प्राप्त की। इसके बाद प्रयागराज से आगे की पढ़ाई पूरी की। नियमित अध्ययन, मेहनत और लगन के बल पर उन्होंने प्रतियोगी परीक्षा में सफलता हासिल की।

अंकित ओझा ने कहा कि यह उपलब्धि माता–पिता के आशीर्वाद, शिक्षकों के मार्गदर्शन और निरंतर मेहनत का परिणाम है।

समाजसेवी प्रमोद पाण्डेय ने कहा कि अंकित ने अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर जूनियर असिस्टेंट परीक्षा उत्तीर्ण कर पूरे गांव का गौरव बढ़ाया है।

सांसद राम प्रसाद चौधरी ने किया बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सांसद राम प्रसाद चौधरी ने जिले के शंकरपुर विकास क्षेत्र विक्रमजोत में बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा किया। उन्होंने चौधरी चरण सिंह पंप हाउस विक्रमजोत के कंहईपुर से लेकर भौसिया, चंद्रपलिया, खेमराजपुर, नरसिंहपुर, लकड़ी पाण्डेय, पकड़ी संग्राम, अर्जुनपुर, ठोकर नंबर–10, जाजूपुर, सरवरपुर, पूरे मोतीराम, बर्दिया लोहार, अशोकपुर और कटारिया–चांदपुर सहित कई गांवों का जायजा लिया। उन्होने बाढ़ खंड बस्ती के अधिकारियों से बात की। उन्होंने अधिकारियों को प्रभावित क्षेत्रों में तुरंत राहत, बचाव, जलनिकासी और जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

बुर्जुग की मौत, 4 पर मुकदमा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। पुरानी बस्ती थाना इलाके में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। नया महुडर संजय कॉलोनी में गेट के सामने पेशाब करने से मना करने पर हुए विवाद में 70 साल के एक बुजुर्ग की मौत हो गई। आरोप है कि बीच–बचाव करने पहुंचे बुजुर्ग को धक्का दिया गया, जिससे वह जमीन पर गिर गए। जिला अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने उन्हें मृत बताया। पुलिस ने इस मामले में चार लोगों के खिलाफ गैर इरादतन हत्या समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज किया है।

नया महुडर संजय कॉलोनी निवासी विनोद कुमार ने बताया कि कल्पनाथ उनके गेट के सामने पेशाब कर रहा था। विनोद ने उसे ऐसा करने से मना किया तो आरोप है कि कल्पनाथ ने गाली–गलौज करना शुरू कर दिया और उनके साथ मारपीट की। शोर सुनकर कल्पनाथ की बेटियां गरिमा, पिंकी और उसकी पत्नी भी मौके पर आ गईं। आरोप है कि सभी ने दोबारा गेट के सामने आकर विनोद के साथ मारपीट की।

इसी दौरान विनोद के पिता मोहनलाल सोनकर बीच–बचाव करने आए। आरोप है कि कल्पनाथ ने उनके साथ भी मारपीट करते हुए उन्हें जोर से धक्का दे दिया। धक्का लगने से मोहनलाल मौके पर ही गिर पड़े। परिजन उन्हें इलाज के लिए बस्ती जिला अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। विनोद की शिकायत पर पुरानी बस्ती पुलिस ने कल्पनाथ, उसकी बेटियां गरिमा, पिंकी और उसकी पत्नी के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

एमएलसी देवेन्द्र प्रताप ने भेजा पत्रः शिक्षा मित्रों को विशेष टीईटी में शामिल करने की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। गोरखपुर–फैजाबाद स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के विधान परिषद सदस्य देवेन्द्र प्रताप सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र भेजकर शिक्षामित्रों को विशेष टीईटी में शामिल किए जाने की मांग की है। इससे बस्ती समेत आसपास के जिलों के शिक्षामित्रों में भी उम्मीद जगी है।

विधान परिषद सदस्य देवेन्द्र प्रताप सिंह के प्रतिनिधि हरीश सिंह ने बताया कि गत 11 सितंबर को भेजे गए पत्र में विधान परिषद सदस्य ने कहा है कि प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में करीब 25 वर्षों से शिक्षामित्र शिक्षण कार्य में योगदान दे रहे हैं। इसके बावजूद उन्हें विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा से अलग रखा गया है, जिससे शिक्षामित्रों में उपेक्षा और निराशा का भाव है। पत्र में कहा गया है कि विद्यालयों के पठन–पाठन में शिक्षामित्रों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उनके लंबे समय के अनुभव और सेवाओं को देखते हुए उन्हें भी विशेष टीईटी में शामिल करने पर विचार किया जाना चाहिए। देवेन्द्र प्रताप सिंह ने मुख्यमंत्री से शिक्षामित्रों को विशेष टीईटी में शामिल करने के संबंध में ऐतिहासिक निर्णय लेने का अनुरोध किया है।

बस्ती जिले में भी बड़ी संख्या में शिक्षामित्र लंबे समय से अपनी सेवा से जुड़े मुद्दों और शिक्षक पात्रता को लेकर उम्मीद लगाए हुए हैं। ऐसे में विधान परिषद सदस्य की ओर से मुख्यमंत्री को भेजे गए इस पत्र के बाद उनकी नजर अब सरकार के अगले कदम पर रहेगी।

नीलगाय के हमले में पूर्व प्रधान की मौत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कप्तानगंज थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत बैहार के पूर्व प्रधान जैसराम (48) की नीलगाय के हमले में मौत हो गई। यह घटना रविवार सुबह बैहार–सिंघोरिया के बीच गन्ने के खेत के पास हुई, जब जैसराम अपने खेत देखने निकले थे। नीलगाय के अचानक हमले से उन्हें गंभीर चोटें आईं और उन्होंने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

परिजनों ने बताया कि जैसराम रविवार सुबह करीब 9 बजे घर से खेत देखने के लिए निकले थे। खेत से लगभग 100 मीटर पहले गन्ने के खेत से अचानक एक नीलगाय बाहर निकली और उन पर हमला कर दिया। जैसराम कुछ समझ पाते, इससे पहले ही वह घायल होकर जमीन पर गिर पड़े।

आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत घटना की जानकारी परिजनों और ग्रामीणों को दी। सूचना मिलते ही कप्तानगंज पुलिस मौके पर पहुंची और जरूरी कार्रवाई की। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

जैसराम की पत्नी का पहले ही निधन हो चुका है। उनके पीछे तीन बेटे और एक बेटी हैं। सबसे बड़े बेटे सूरज कुमार (30) की शादी हो चुकी है, जबकि रोहित कुमार (24) और मोहित कुमार (20) मुंबई में रहकर जीवनयापन करते हैं। पिता की मौत की खबर सुनकर दोनों बेटे मुंबई से घर के लिए रवाना हो गए हैं। उनकी बेटी सविता हाईस्कूल की छात्रा है।

ग्रामीणों का कहना है कि इलाके के गन्ने के खेतों और आसपास नीलगायों की मौजूदगी बनी रहती है। नीलगायों के अचानक हमलों से किसानों में चिंता का माहौल है। पूर्व प्रधान की मौत से पूरे गांव में शोक है। कप्तानगंज थानाध्यक्ष आलोक कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि प्रथम दृष्टया जैसराम की मौत नीलगाय के हमले से होने की बात सामने आ रही है। ग्रामीणों ने भी नीलगाय के हमले की जानकारी दी है। हालांकि मौत के वास्तविक कारण की पुष्टि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही हो सकेगी।

यूजीसी के नये कानून की वापसी की मांग को लेकर मेधा का धरना 21 वें दिन भी जारी

-छात्रों की आवाज अनसुना न करे सरकार- दीनदयाल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मेधा पार्टी द्वारा शिक्षा व्यवस्था में सुधार, यूजीसी के नये कानून की वापसी सहित 7 सूत्रीय मांगों को लेकर गांधीकला भवन परिसर में बापू प्रतिमा के निकट चल रहा धरना रविवार को 21 वें दिन भी जारी रहा। मेधा पार्टी के केन्द्रीय प्रवक्ता दीन दयाल त्रिपाठी ने कहा कि पार्टी गरीबों को मुफ्त शिक्षा का अधिकार दिलाने के अभियान को आगे बढ़ा रही है। सरकारों ने शिक्षा में अपेक्षित सुधार न किया तो पार्टी निर्णायक आन्दोलन को बाध्य होगी। कहा कि इस मसले पर केन्द्र सरकार की चुप्पी दुर्भाग्यपूर्ण है।

सवर्ण आर्मी संतकबीर नगर जिलाध्यक्ष विश्वनाथ त्रिपाठी ने धरने को समर्थन देते हुये कहा कि जरूरी हुआ तो सवर्ण आर्मी धरने में शामिल होगी।

मेधा पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता दीनदयाल तिवारी ने कहा कि शिक्षा में समानता और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल करने के लिए पार्टी लगातार संघर्ष करती रहेगी। गरीब बच्चों को बेहतर शिक्षा और उनके अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष जारी रहेगा। कहा कि यूजीसी में नया कानून लाकर केन्द्र सरकार छात्रों को जाति धर्म में विभाजित करने का षड़यंत्र कर रही है। यह कानून वापस न हुआ तो देश को गंभीर परिणाम भोगने होंगे।

धरने के 21 वें दिन मुख्य रूप से बापू प्रतिमा के निकट मुख्य रूप से पं. सुनील भट्ट, उमेश पाण्डेय मुन्ना, सन्तोष शुक्ल, विशाल सिंह, दीपक शुक्ला, , वृजेश द्विवेदी, हर्षित तिवारी, अजय कुमार चौधरी, राहुल त्रिपाठी, जावेद अहमद, विजय कुमार पाल, दिनेश कुमार चौधरी, रविन्द्र सिंह, त्रिलोकीनाथ द्विवेदी, अंशू चौरसिया, देवेश पाण्डेय के साथ ही मेधा के अनेक पदाधिकारी, सदस्य और विभिन्न संगठनों के लोग शामिल रहे।

सांसद रत्न से पुरस्कृत जगदम्बिका पाल का विधायक अजय सिंह ने किया स्वागत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। प्रतिष्ठित सांसद रत्न पुरस्कार–2026 से सम्मानित होने के बाद गृह जनपद बस्ती में प्रथम आगमन पर डुमरियागंज के सांसद एवं वरिष्ठ जननेता जगदम्बिका पाल का हर्रैया विधानसभा क्षेत्र के मुरादीपुर चौराहे पर रविवार को भव्य स्वागत किया गया। हर्रैया विधायक अजय सिंह के नेतृत्व में आयोजित स्वागत समारोह में पार्टी पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने फूल–मालाओं के साथ सांसद का जोरदार स्वागत किया। इस दौरान मुरादीपुर चौराहा कार्यकर्ताओं के उत्साह और नारों से गूंज उठा। उपस्थित लोगों ने सांसद रत्न पुरस्कार–2026 से सम्मानित होने पर जगदम्बिका पाल को बधाई देते हुए इसे बस्ती जनपद और क्षेत्रवासियों के लिए गौरव का क्षण बताया।

विधायक अजय सिंह ने कहा कि जगदम्बिका पाल को मिला यह प्रतिष्ठित सम्मान पूरे बस्ती जनपद, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं और क्षेत्र की जनता के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि सांसद की जनसेवा, संसदीय सक्रियता और जनहित के मुद्दों के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने कहा कि सांसद रत्न पुरस्कार–2026 ने बस्ती की माटी का गौरव राष्ट्रीय पटल पर और ऊंचा किया है। यह सम्मान जनता की आवाज को संसद में मजबूती से उठाने और जनसेवा के प्रति उनके निरंतर समर्पण का सम्मान है।स्वागत समारोह में सैकड़ों की संख्या में पार्टी पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभी ने सांसद जगदम्बिका पाल के यशस्वी एवं उज्ज्वल सार्वजनिक जीवन की कामना करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं।

ब्रम्हलीन महंत अवेद्यनाथ की पुण्य तिथि पर विश्व हिन्दू महासंघ ने निकाली श्रीकृष्ण जन्म भूमि मुक्ति यज्ञ, विजय यात्रा

-हवन, यज्ञ, सहभोज में उमडे लोग
-महंत अवेद्यनाथ ने लोकमंगल की भूमिका को नई दिशा दिया- दिग्विजय सिंह राना

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । विश्व हिन्दू महासंघ द्वारा गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पूज्य गुरुदेव राष्ट्र संत ब्रम्हलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के पुण्य तिथि के निमित्त जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह के संयोजन में राजकीय इण्टर कालेज से अमहट घाट स्थित स्द्धिेश्वरनाथ मंदिर तक श्रीकृष्ण जन्म भूमि मुक्ति यज्ञ, विजय यात्रा निकाली गई। कार्यक्रम सहभोज के साथ सम्पन्न हुआ।

मुख्य अतिथि अतिथि दिग्विजय सिंह राना ने कहा कि महंत अवेद्यनाथ श्री रामजन्म भूमि के प्राण थे। सबको साथ लेकर चलने की उनमें विलक्षण प्रतिभा थी। उसी के परिणाम स्वरूप श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के साथ सभी संप्रदायों, दार्शनिक परम्पराओं के संत जुड़ते चले गए और लक्ष्य पूर्ण हुआ। गोरखनाथ मंदिर की वर्तमान भव्यता, शानदार वास्तुशिल्प महंत अवेद्यनाथ की ही देन है। उन्होने अस्पताल, स्कूलों की स्थापना कर लोकमंगल की भूमिका को नई दिशा दिया, उनका योगदान सदैव याद किया जायेगा।

महासंघ के जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह ने कहा कि ब्रह्मलीन महन्थ अवेद्यनाथ जी ने हिन्दू धर्म की आध्यात्मिक साधना के साथ 'सामाजिक हिन्दू' साधना को भी आगे बढाया और सामाजिक जनजागरण को अधिक महत्वपूर्ण मानकर हिन्दू धर्म के सोशल इंजीनियरिग पर बल दिया । बहुसंख्यक समाज को जोड़ने के लिए सहभोजों के क्रम में महंत अवेद्यनाथ ने बनारस में संतों के साथ डोमराजा के घर सहभोज कर उदाहरण प्रस्तुत किया। 12 सितम्बर 2014 को महन्थ अवेद्यनाथ ब्रम्हलीन हो गये। उनके सपनों, संकल्पों को पूरा करने का दायित्व हम सबका है। कहा कि अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ श्रीकृष्ण जन्म भूमि मुक्ति के लिये निरन्तर प्रयासरत है। पुज्य गुरूदेव महन्थ अवेद्यनाथ की कृपा से शीघ्र ही यह लक्ष्य पूरा होगा।

आर्य समाज नई बाजार के प्रधान ओम प्रकाश आर्य कहा कि महंत अवेद्यनाथ ने अपने गुरु ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गोरक्षपीठ की शैक्षिक और सांस्कृतिक परंपरा को समृद्ध किया। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और लोककल्याण को सर्वोपरि माना। उनका योगदान हम सबको सदैव प्रेरणा देगा। कार्यक्रम में भाजपा के वरिष्ठ नेता अंकुर वर्मा, प्रमोद पाण्डेय, दिलीप पाण्डेय, सौरभ त्रिपाठी, प्रमोद सिंह, कुलदीप मिश्रा,सुधीर सिंह, समर प्रताप सिंह ,चंद्रशेखर कमलापुरी, महंत गिरजेश दास, विंद गोपाल त्रिपाठी,सौरभ त्रिपाठी, विवेक श्रीवास्तव, डॉ पंकज त्रिपाठी, पूनम सिंह वशिष्ठ मुनि दुबे, विकास प्रजापति, आदि ने कहा कि हिन्दू समाज की एकता, परस्पर समन्वय से प्रगति ही महंत अवेद्यनाथ को सच्ची श्रद्धांजलि है। उन्होने जो दिशा दिया है उसे गतिमान करने की जरूरत है।

गोष्ठी और सहभोज में मुख्य रूप से विवेक श्रीवास्तव, डॉ पंकज त्रिपाठी, पूनम सिंह, वशिष्ठ मुनि दुबे, विकास प्रजापति, राजकुमार मंटू चौधरी, अर्पण श्रीवास्तव, जिला प्रभारी शिवलाल प्रेमी, विपिन सिंह, राकेश सिंह, सुनील मिश्रा, बालकृष्ण सिंह, सौरभ चतुर्वेदी, मुन्ना सिंह, डॉ परशुराम साहनी, परमानंद गुप्ता, सोनार, उज्जवल सिंह, संदीप कमलापुरी, राहुल कमलापुरी, विजय गुप्ता, गुलाब सिंह, महेंद्र पाठक जी, बाबा जयप्रकाश दास, देवेन्द्र दास, पहले वाले बाबा, सुंदर जी महाराज, जगरामनाथ, अजय स्वरानंद महाराज अभिषेक आर्य रूपनारायण गौड़ ,सतीश पांडे, शिवम मिश्रा, सिकंदर वर्मा, राजन पाल, सूरज श्रीवास्तव, प्रिंस जायसवाल, अविनाश शर्मा, अभिषेक सिंह, अभय चौधरी के साथ ही विश्व हिन्दू महासंघ के सैकड़ो पदाधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जनपद न्यायालय कर्मचारियों ने लंबित मांगों को लेकर मुख्यमंत्री को भेजा ज्ञापन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जनपद न्यायालयों के कर्मचारियों की विभिन्न लंबित मांगों को लेकर दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ ने रविवार को मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सदर विधायक महेन्द्र नाथ यादव को सौंपा। ज्ञापन में न्यायालय कर्मचारियों से संबंधित विभिन्न सेवा, वेतन, पद सृजन एवं कार्य परिस्थितियों से जुड़ी मांगों के शीघ्र निस्तारण की मांग की गई।

ज्ञापन देने के बाद कर्मचारी संघ के अध्यक्ष भागवत शुक्ल ने कहा कि न्यायालय कर्मचारी न्यायिक व्यवस्था के सुचारु संचालन की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। कर्मचारियों की सेवा संबंधी समस्याओं एवं कार्यभार से जुड़ी विसंगतियों का समाधान किया जाना आवश्यक है। कहा कि यदि शासन द्वारा मांगों पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया तो महात्मा गांधी जयंती एवं अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के अवसर पर जिले में शांतिपूर्ण तरीके से तिरंगा रैली निकाली जाएगी। इसके पश्चात भी कर्मचारीगण की इन गंभीर मांगों की अनदेखी जारी रही तो प्रांतीय संघ के आह्वान पर 25 अक्टूबर को प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में पूरे प्रदेश के न्यायालय कर्मचारीगण सत्याग्रह करने पर विवश होंगे।

ज्ञापन में एफ.टी.सी. न्यायालयों के कर्मचारियों के वेतन में उच्च न्यायालय के आदेश के अनुपालन में प्रतिवर्ष 10 प्रतिशत वृद्धि एवं सेवा नियमतीकरण, प्रोन्नति की अर्हकारी सेवा शर्तों में शिथिलीकरण हेतु प्रस्तावित नियमावली संशोधन को शीघ्र स्वीकृति, पेड अप्रेन्टिस पदों को कनिष्ठ सहायक पदों में समायोजित करने संबंधी नियमावली संशोधन, तथा जनपद न्यायालयों में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के लुप्त पद को पुनः सृजित करने की मांग प्रमुखता से उठाई गई।

इसके अतिरिक्त ग्रेड वेतन 4600 वाले लिपिकीय पदों को राजपत्रित प्रतिष्ठा प्रदान करने, मकान किराया भत्ते के पुनरीक्षण, लिपिकवर्गीय कार्मिकों की शैक्षणिक योग्यता स्नातक निर्धारित करते हुए ग्रेड वेतन 2800 (पे लेवल–5) प्रदान करने, कार्यभार के अनुरूप अतिरिक्त पदों का सृजन तथा पद सृजन होने तक अतिरिक्त कार्य भत्ता देने और बयान लेखन के लिए बयान लेखक के नियमित पद सृजित करने की मांग भी ज्ञापन में शामिल है।

ज्ञापन सौंपने वालों में संतोष कुमार त्रिपाठी, वीरेंद्र कुमार चौधरी, दीपक कुमार श्रीवास्तव, रोहित कुमार जायसवाल, सालिक राम यादव, जैनेन्द्र कुमार यादव, सुमित झा, आशीष विश्वकर्मा, उमेश जायसवाल, आयुष कुमार, प्रभात रंजन पटेल, उत्तम सिंह, जय प्रकाश सिंह, अमन, मनोज कुमार, सूरज पांडे, राम चंद्र यादव, शिव कुमार, मेराजुद्दीन, अरुण मौर्या, आदर्श श्रीवास्तव, बृजेश सिंह, शत्रुघ्न पाण्डेय, कमल सिंह, प्रदीप कुमार यादव सहित बड़ी संख्या में न्यायालय कर्मचारी शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 14 सितम्बर 2026 सोमवार

सम्पादकीय

त्योहारों के नाम पर राजनीति

देश त्योहारों के मौसम में प्रवेश कर रहा है। गणेशोत्सव, नवरात्रि, दिवाली एक के बाद एक दस्तक देंगे। साथ ही एक और सिलसिला शुरू हो गया है। यह अब लगभग हर साल दोहराया जाने वाला अनुष्ठान बन चुका है। यानी त्योहारों पर विवाद। कौन किस उत्सव में शामिल हो सकता है, लाउडस्पीकर कितनी देर बजेगा, सड़क पर इबादत होगी या नहीं, यह सवाल अब धर्म के दायरे से निकलकर सीधे सियासत के मंच पर पहुंच चुके हैं। दिलचस्प यह है कि इस बार बंटवारे की लकीर सिर्फ हिंदू–मुसलिम के बीच नहीं, बल्कि सत्तारूढ़ भाजपा और उसके सहयोगियों के भीतर भी साफ दिखाई दे रही है। मसले पर सरोकार की पड़ताल।

विवाद की शुरुआत महाराष्ट्र से हुई। विश्व हिंदू परिषद ने एलान किया कि नवरात्रि उत्सव के दौरान राज्यभर के गरबा और डांडिया आयोजनों में मुसलमानों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। संगठन ने आयोजकों से कहा कि वे प्रतिभागियों की पहचान की पुष्टि के लिए आधार कार्ड की जांच करें और माथे पर तिलक लगाएं। इस मांग को सबसे मुखर समर्थन मिला महाराष्ट्र के मंत्री नितेश राणे से। उन्होंने कहा कि गरबा–डांडिया में आने वालों की पहचान जांची जानी चाहिए और प्रवेश से पहले हनुमान चालीसा पढ़वाई जानी चाहिए।

राज्य के मंत्री नितेश राणे ने विहिप के रुख का समर्थन करते हुए आरोप लगाया कि ऐसे त्योहारों के दौरान लव जिहाद के मामले बढ़ जाते हैं। इसलिए जो लोग मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं रखते, उन्हें हिंदू धार्मिक आयोजनों में हिस्सा नहीं लेना चाहिए। ध्यान देने की बात यह है कि लव जिहाद शब्द दक्षिणपंथी समूहों द्वारा उस कथित साजिश के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें मुसलिम पुरुषों पर हिंदू महिलाओं को धर्म–परिवर्तन के इरादे से प्रेम–जाल में फंसाने का आरोप लगाया जाता है, और यह एक विवादास्पद और चुनौती भरी शब्दावली रही है, जिसने बार–बार राजनीतिक और सांप्रदायिक टकराव को जन्म दिया है।

पश्चिम बंगाल की तस्वीर इस बार पूरी तरह बदली हुई है। इस साल हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा ने प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता हासिल की। भवानीपुर सीट पर शुभेंदु अधिकारी के हाथों ममता बनर्जी हार गईं। अधिकारी राज्य के मुख्यमंत्री बने। सत्ता में आते ही अधिकारी ने सांस्कृतिक–धार्मिक मोर्चे पर आक्रामक रुख अपनाया है। बुधवार को उन्होंने दक्षिण कोलकाता में जादवपुर विश्वविद्यालय के निकट करीब तीन किलोमीटर लंबी गेरुआ सम्मान यात्रा निकाली, जिसका मकसद भाजपा के अनुसार भगवा रंग की गरिमा बनाए रखना था। यात्रा के दौरान लाउडस्पीकरों पर गायत्री मंत्र गूंजते रहे, और यात्रा जादवपुर परिसर के बाहर पहुंचते ही विश्वविद्यालय का गेट बंद कर दिया गया।

बंगाल में ही एक और विवाद छिड़ा। दुर्गा पूजा के मौके पर मांसाहार को लेकर। बागेश्वर धाम के प्रमुख धीरेंद्र शास्त्री ने हावड़ा जिले के लिलुआ में एक कार्यक्रम में बंगाल के लोगों से दुर्गा पूजा के दौरान मांसाहारी भोजन बनाने और बेचने से परहेज करने की अपील की। इस कथित अपील को लेकर पश्चिम बंगाल में विवाद बढ़ गया। इस बयान पर दक्षिण कोलकाता जिला कांग्रेस कमेटी ने धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ भवानीपुर थाने में पुलिस शिकायत दर्ज कराते हुए कार्रवाई और प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की। कांग्रेस नेता प्रदीप प्रसाद ने कहा कि दुर्गा पूजा पश्चिम बंगाल का सबसे अहम और प्रतिष्ठित उत्सव है और इस पर बाहर से फरमान सुनाना बंगालियों की भावनाओं को आहत करता है। धीरेंद्र शास्त्री की तस्वीर जलाने के मुद्दे पर पुलिस ने कांग्रेस के एक नेता को गिरफ्तार कर लिया।

दिलचस्प यह रहा कि इस मुद्दे पर भाजपा के भीतर भी एकराय नहीं दिखी। पार्टी के वरिष्ठ नेता और मेघालय के पूर्व राज्यपाल तथागत राय ने खुलकर असहमति जताते हुए कहा कि वे खुद नवरात्रि के दौरान मांसाहारी भोजन करते हैं और फिर भी पूरी तरह हिंदू हैं, और हिंदुत्व में किसी एक जीवनशैली को सबके ऊपर थोपने की परंपरा नहीं रही, क्योंकि हिंदू धर्म की सबसे बड़ी विशेषता उसकी विविधता है। सत्तारूढ़ भाजपा सरकार में मंत्री दिलीप घोष ने भी शास्त्री के बयान से अलग रुख अपनाते हुए कहा कि दुर्गा पूजा में मांसाहार बंगाल में कभी विवाद का विषय नहीं रहा।

धार्मिक ध्वनि और सार्वजनिक स्थल का सवाल सिर्फ हिंदू उत्सवों तक सीमित नहीं। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बार–बार दोहराते रहे हैं कि सार्वजनिक सड़कों पर नमाज नहीं पढ़ी जाएगी, और मस्जिदों समेत सभी धार्मिक स्थलों पर लाउडस्पीकर के अनियंत्रित इस्तेमाल पर सख्ती बरती जा रही है। राजस्थान में रमजान के दौरान एक भाजपा विधायक ने लाउडस्पीकर की तेज आवाज पर आपत्ति जताते हुए स्पष्ट किया कि उन्हें नमाज या अजान से कोई एतराज नहीं है। दिक्कत तय डेसिबल सीमा से ज्यादा शोर से है, और इसके लिए सुप्रीम कोर्ट के दिशानिर्देशका हवाला दिया। यह विवाद दिलचस्प इसलिए भी रहा क्योंकि इसमें भाजपा के ही एक विधायक को अपनी सरकार के भीतर असहज स्थिति में देखा गया।

इन सिलसिलेवार विवादों को अगर एक साथ रखकर देखा जाए तो एक बात साफ उभरती है। त्योहार अब सिर्फ आस्था और उल्लास का मौका भर नहीं रह गए, वे राजनीतिक पहचान की परीक्षा भूमि बन चुके हैं। लेकिन इस पूरी तस्वीर की सबसे दिलचस्प परत यह है कि विभाजन की यह लकीर अब सिर्फ हिंदू–मुसलिम के बीच नहीं खिंच रही, यह सत्तारूढ़ गठबंधन के भीतर भी उतनी ही गहरी है। गरबा विवाद में राणे और आठवले, अमृता फडणवीस अलग–अलग खेमों में खड़े मिले। डीजे विवाद में नासिक और पुणे के भाजपा नेता आमने–सामने आ गए। मांसाहार विवाद में तथागत राय और दिलीप घोष ने बागेश्वर बाबा से दूरी बना ली। यह विविधता बताती है कि भारतीय समाज और यहां तक कि हिंदुत्व की राजनीति भी किसी एक ढांचे में पूरी तरह फिट नहीं बैठती।

सवाल यह है कि ऐसा भारत कितना आगे बढ़ पाएगा जो हर मौसम में किसी न किसी धार्मिक विवाद में उलझा रहे। पड़ोसी और दूर के लोकतंत्रों का अनुभव बताता है कि यह सवाल अकेले भारत का नहीं है। डेनमार्क से लेकर स्विट्जरलैंड और फ्रांस तक हर समाज इसी तनाव से जूझ रहा है, जहां बहुसंख्यक पहचान और अल्पसंख्यक अधिकारों के बीच संतुलन एक स्थायी चुनौती बना हुआ है। फर्क सिर्फ इतना है कि भारत जैसे विविधता प्रधान लोकतंत्र में इस संतुलन को साधे रखना कहीं ज्यादा जटिल और कहीं ज्यादा जरूरी है।

हिन्दी दिवस: उत्सव से अधिक आत्ममंथन का अवसर

– डॉ. सत्यवान सौरभ–

हर वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाने वाला हिंदी दिवस हमारे संवैधानिक इतिहास, भाषायी विविधता और सांस्कृतिक स्मृति से जुड़ा महत्वपूर्ण अवसर है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। संविधान लागू होने के बाद इस निर्णय को अनुच्छेद 343 में स्थान मिला। इसी ऐतिहासिक घटना की स्मृति में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। लेकिन हिंदी दिवस का अर्थ केवल इतना नहीं होना चाहिए कि इस दिन हिंदी के महत्व पर भाषण दिए जाएँ, कविताएँ सुनाई जाएँ और सरकारी कार्यालयों में हिंदी सप्ताह या पखवाड़े आयोजित कर औपचारिकता पूरी कर ली जाए। असली सवाल यह है कि हिंदी हमारे जीवन, शिक्षा, प्रशासन, न्याय, विज्ञान, तकनीक और रोजगार की भाषा कितनी बन पाई है। यदि हिंदी का सम्मान समारोहों और घोषणाओं तक सीमित है, तो हिंदी दिवस हमें उत्सव से अधिक आत्ममंथन का अवसर देता है।

सबसे पहले यह स्पष्ट समझना जरूरी है कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं, बल्कि संघ की राजभाषा है। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी है। भारत जैसे बहुभाषी देश में यह अंतर केवल संवैधानिक शब्दावली का विषय नहीं, बल्कि हमारी लोकतांत्रिक संवेदना का भी प्रश्न है। भारत की पहचान उसकी भाषायी विविधता से निर्मित होती है। तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, उड़िया, उर्दू, कश्मीरी, मैथिली और अनेक अन्य भारतीय भाषाएँ समाज की स्मृतियों, अनुभवों और सांस्कृतिक विरासत को अभिव्यक्ति देती हैं। इसलिए हिंदी का विकास इन भाषाओं के विरोध में नहीं, बल्कि उनके साथ संवाद और सहयोग के माध्यम से होना चाहिए।

हिंदी को यदि भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क की भाषा बनने का अवसर मिला है, तो उसके साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी है। हिंदी संवाद का पुल बने, प्रभुत्व का माध्यम नहीं। किसी भी भाषा का विस्तार तभी सहज और स्वीकार्य होता है, जब उसमें सम्मान, संवेदनशीलता और समावेश की भावना हो।

हिंदी दिवस पर विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और सरकारी संस्थानों में निबंध–लेखन, भाषण, वाद–विवाद, कविता–पाठ, प्रश्नोत्तरी और पुरस्कार–वितरण जैसे कार्यक्रम होते हैं। इन आयोजनों का अपना महत्व है और वे भाषा के प्रति उत्साह पैदा करते हैं, लेकिन हिंदी का वास्तविक विकास इन कार्यक्रमों के समाप्त होने के बाद शुरू होता है। हिंदी को समारोहों की भाषा से आगे बढ़ाकर प्रयोग और ज्ञान की भाषा बनाना समय की आवश्यकता है।

आज भी सरकारी वेबसाइटों, शोधा–सामग्रियों और अनेक आधिकारिक दस्तावेजों में अंग्रेजी का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उच्च शिक्षा में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों और नवीन शोध–सामग्री की कमी का सामना करना पड़ता है। विज्ञान, चिकित्सा, कानून, प्रबंधान और सूचना–प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में हिंदी सामग्री उपलब्ध तो है, लेकिन उसकी मात्रा, गुणवत्ता और अद्यतन स्वरूप को अभी और मजबूत किए जाने की आवश्यकता है।

हिंदी को ज्ञान की भाषा बनाने के लिए केवल अनुवाद पर्याप्त नहीं होगा। मौलिक लेखन, आधुनिक शब्दावली, विषय–विशेषज्ञों की भागीदारी और गुणवत्तापूर्ण संपादन भी जरूरी है। किसी अंग्रेजी पुस्तक का कठिन और यांत्रिक अनुवाद विद्यार्थियों को हिंदी के करीब नहीं लाता। ज्ञान तभी जनसुलभ होगा, जब उसकी भाषा सरल, स्वाभाविक और विषयानुकूल हो।

भाषा और शिक्षा का संबंध भी अत्यंत गहरा है। जिस भाषा में बच्चा सोचता और अनुभव करता है, उसी भाषा में उसे जटिल विषयों को समझने का बेहतर अवसर मिलता है। इसके बावजूद भारत में भाषा–शिक्षा का प्रश्न अक्सर सामाजिक प्रतिष्ठा और रोजगार की चिंता से जुड़ जाता है। अंग्रेजी का ज्ञान आज के वैश्विक और रोजगारपरक परिवेश में महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में शिक्षा को कमतर माना जाए।

हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के सामने अक्सर दोहरी चुनौती होती है। एक ओर उन्हें अपनी भाषा में पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण अध्ययन–सामग्री नहीं मिलती, दूसरी ओर उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेजी शब्दावली के कारण अतिरिक्त कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसका समाधान किसी एक भाषा को हटाकर नहीं, बल्कि मजबूत बहुभाषी शिक्षा–व्यवस्था विकसित करके किया जा सकता है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी में विज्ञान, समाज–विज्ञान, कानून, अर्थशास्त्र और तकनीक की उच्चस्तरीय सामग्री तैयार होनी चाहिए। विद्यार्थियों को हिंदी में शोधा करने, डिजिटल सामग्री तैयार करने, पत्रकारिता करने और नए विचार व्यक्त करने के पर्याप्त अवसर भी मिलने चाहिए। हिंदी को केवल परीक्षा की भाषा नहीं, बल्कि चिंतन और नवाचार की भाषा बनाना होगा।

डिजिटल युग ने हिंदी के सामने नई संभावनाएँ भी खोली हैं। इंटरनेट और स्मार्टफोन के विस्तार के साथ समाचार–पोर्टल, वीडियो मंच, पॉडकास्ट, ब्लॉग और सोशल मीडिया पर हिंदी सामग्री तेजी से बढ़ी है। करोड़ों लोग हिंदी में समाचार पढ़ते, मनोरंजन सामग्री देखते और डिजिटल सेवाओं का उपयोग करते हैं। यह हिंदी के लिए बड़ा अवसर है। लेकिन डिजिटल हिंदी के सामने चुनौतियाँ भी हैं। रोमन लिपि में हिंदी लिखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इससे त्वरित संवाद तो संभव होता है, लेकिन देवनागरी लेखन की आदत कमजोर पड़ने की आशंका भी रहती है। सोशल मीडिया पर भाषायी अशुद्धियों, अधूरी जानकारी और सनसनीखेज अभिव्यक्तियों का प्रसार भी चिंता का विषय है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के वर्तमान दौर में हिंदी को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना और भी जरूरी हो गया है। हिंदी में बेहतर अनुवाद–सॉफ्टवेयर, वाक्–पहचान प्रणालियाँ, डिजिटल शब्दकोश, ई–पुस्तकालय और ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करने होंगे। भाषा–प्रौद्योगिकी में निवेश के बिना हिंदी डिजिटल भविष्य में केवल सामग्री की उपभोक्ता बनकर रह सकती है। उसे सृजन, ज्ञान और नवाचार की भाषा बनाने के लिए संस्थागत प्रयास आवश्यक हैं।

हिंदी का भविष्य सरकारी आदेशों से अधिक युवाओं की पसंद और प्रयोग से तय होगा। युवा हिंदी में तभी लिखेंगे और पढ़ेंगे, जब उन्हें इसमें आधुनिक विषयों, रोजगार और अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर दिखाई देंगे। इसलिए हिंदी को केवल अतीत के गौरव तक सीमित रखने के बजाय वर्तमान की जीवंत भाषा बनाना होगा।

हिंदी साहित्य, पत्रकारिता और सिनेमा को बेरोजगारी, जलवायु संकट, लैंगिक असमानता, प्रवासन, डिजिटल निजता, मानसिक स्वास्थ्य और बदलते पारिवारिक संबंधों जैसे समकालीन प्रश्नों से संवाद करना होगा। नई पीढ़ी की भाषा, उसके अनुभव और उसकी बेचैनी अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों में दिखाई देनी चाहिए। जो भाषा अपने समय की समस्याओं को व्यक्त नहीं करती, वह धीरे–धीरे औपचारिक होकर जीवन से दूर हो सकती है।

आज हिंदी में ब्लॉगिंग, स्वतंत्र पत्रकारिता, पटकथा–लेखन, विज्ञापन, अनुवाद, पॉडकास्ट और ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ मौजूद हैं। इन क्षेत्रों को संस्थागत समर्थन देकर हिंदी को रचनात्मक अर्थव्यवस्था और रोजगार से जोड़ा जा सकता है।

हिंदी के विकास के लिए नीति के स्तर पर भी ठोस पहल आवश्यक है। सरकारी सेवाओं और न्यायिक प्रक्रियाओं में सरल तथा स्पष्ट हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उच्च शिक्षा और तकनीकी विषयों की गुणवत्तापूर्ण सामग्री हिंदी में तैयार होनी चाहिए। अनुवादकों, संपादकों और विषय–विशेषज्ञों को बेहतर अवसर और सम्मान मिलना चाहिए। हिंदी के साथ सभी भारतीय भाषाओं के अध्ययन और प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। डिजिटल मंचों के लिए सरल, आधुनिक और मानकीकृत हिंदी विकसित करने के साथ सरकारी वेबसाइटों और सार्वजनिक सेवाओं को बहुभाषी तथा उपयोगकर्ता–अनुकूल बनाया जाना चाहिए। हिंदी में मौलिक शोधा, पत्रकारिता और साहित्यिक प्रयोगों को आर्थिक तथा संस्थागत सहयोग मिलना भी जरूरी है।

वर्ष 2026 में हिंदी दिवस और छठे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन 14 सितंबर को किया जा रहा है। ऐसे अवसर को केवल प्रशासनिक प्रयोग की चर्चा तक सीमित रखने के बजाय हिंदी के व्यापक सामाजिक, शैक्षिक और तकनीकी भविष्य पर विचार का मंच बनाया जाना चाहिए।

हिंदी दिवस का सबसे बड़ा संदेश यही है कि भाषा का सम्मान केवल भावनाओं से नहीं, बल्कि व्यवहार और संस्थागत नीतियों से सिद्ध होता है। हिंदी को अंग्रेजी के विरोध में खड़ा करने के बजाय भारतीय भाषाओं के सहयोग, आधुनिक ज्ञान और डिजिटल तकनीक से जोड़ना होगा। हिंदी को बचाने की आवश्यकता नहीं हैय आवश्यकता उसे समय के अनुरूप विकसित करने की है। वह तभी जीवंत और प्रभावी रहेगी, जब उसमें विज्ञान की स्पष्टता, साहित्य की संवेदना, पत्रकारिता की निर्भीकता और तकनीक की गति एक साथ उपस्थित हों।

इसलिए हिंदी दिवस पर हमारा संकल्प केवल हिंदी बोलने का नहीं, बल्कि हिंदी में सोचने, शोध करने, ज्ञान रचने और नए अवसर निर्मित करने का होना चाहिए। हिंदी समारोहों की भाषा से आगे बढ़कर जीवन, शिक्षा, ज्ञान और रोजगार की भाषा बने यही हिंदी दिवस की वास्तविक सार्थकता होगी।

ब्रिक्स में नई दिल्ली की कूटनीतिक भूमिका

– अशोक भाटिया–

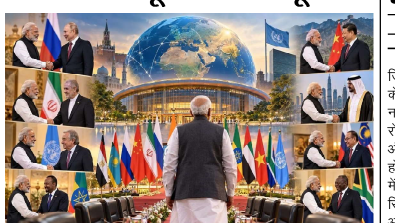

वैश्विक अर्थव्यवस्था इस समय एक ऐसे दोराहे पर खड़ी है जहां अनिश्चितता, भू–राजनीतिक तनाव और मंदी की आशंकाओं ने विकसित देशों की रफ्तार को धीमा कर दिया है। ऐसे संकटपूर्ण वैश्विक परिदृश्य में नई दिल्ली के श्भारत मंडपमश् में आयोजित 18वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन दुनिया के लिए एक नई उम्मीद बनकर उभरा है। इस सम्मेलन का सबसे बड़ा और स्पष्ट संदेश यह है कि जब पूरी दुनिया युद्धों के साए और आर्थिक अस्थिरता से जूझ रही है, तब भारत वैश्विक मंच पर आर्थिक विकास (ग्रोथ) का सबसे मजबूत और भरोसेमंद चेहरा बनकर सामने आया है। ब्रिक्स के मंच पर भारत की इस आर्थिक धमक और कूटनीतिक कौशल ने यह साबित कर दिया है कि नई दिल्ली अब केवल वैश्विक विमर्श का हिस्सा नहीं है, बल्कि वह वैश्विक एजेंडा तय करने वाली महाशक्ति बन चुकी है। श्भारत का डंकाश बजने का यह स्वर केवल राजनीतिक बयानबाजी नहीं, बल्कि ठोस आर्थिक आंकड़ों, सुधारों और कूटनीतिक परिपक्वता की बुनियाद पर टिका हुआ है।

18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन का समापन भारत के लिए एक बड़ी कूटनीतिक और आर्थिक विजय के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत ने न केवल एक सफल और निर्बाध सम्मेलन की मेजबानी की है, बल्कि दुनिया को मंदी के दौर से बाहर निकलने का एक नया विजन भी दिया है। भारत की विशाल घरेलू मांग, युवा जनसांख्यिकी, राजनीतिक स्थिरता और निरंतर होते आर्थिक सुधारों ने इसे वैश्विक विकास का एक ऐसा इंजन बना दिया है जिसे कोई भी नजरअंदाज नहीं कर सकता। 'भारत का डंकाश बजने का सीधा अर्थ यह है कि अब वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़े फैसले नई दिल्ली की सहमति के बिना नहीं लिए जा सकते। भारत ने इस ब्रिक्स सम्मेलन के माध्यम से दुनिया को जो 'ग्रोथ का भरोसा' दिया है, वह आने वाले दशकों में एक श्विकसित भारतश और एक अधिक संतुलित, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

इस शिखर सम्मेलन में भारत की केंद्रीय भूमिका को समझने के लिए सबसे पहले उस वैश्विक पृष्ठभूमि को देखना होगा जिसमें इसका आयोजन हो रहा है। एक तरफ जहां यूरोप और अमेरिका जैसे पारंपरिक आर्थिक पावरहाउस उच्च मुद्रास्फीति, कर्ज के संकट और अंदरूनी राजनीतिक अस्थिरता से कमजोर हुए हैं, वहीं दूसरी तरफ रूस–यूक्रेन युद्ध और मध्य पूर्व के संकट ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को छिन्न–भिन्न कर दिया है। इस चौतरफा संकट के बीच अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी संस्थाएं लगातार भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था मान रही हैं। जब ब्रिक्स के पुराने और नए सदस्य देश नई दिल्ली में एकत्रित हुए, तो उनके सामने एक ऐसा भारत था जिसने न केवल महामारी और युद्ध के झटकों को सफलतापूर्वक झेला है, बल्कि अपनी विकास दर को 7 प्रतिशत से ऊपर बनाए रखा है। यही कारण है कि इस सम्मेलन में भारत द्वारा दिए गए 'ग्रोथ के भरोसे' को दुनिया ने हाथों–हाथ लिया है।

भारत की इस सफलता का सबसे मजबूत स्तंभ उसकी श्रणनीतिक स्वायत्तताश और संतुलित कूटनीति है। ब्रिक्स समूह का इस समय अभूतपूर्व विस्तार हो चुका है, जिसमें अब ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और मिस्र जैसे देश शामिल हैं। इन देशों के आने से ब्रिक्स की आर्थिक ताकत तो बढ़ी है, लेकिन इसके साथ ही समूह के भीतर भू–राजनीतिक जटिलताएं और आपसी मतभेद भी गहरे हुए हैं। मिसाल के तौर पर, ईरान और खाड़ी देशों के बीच के ऐतिहासिक तनाव या फिर अमेरिका के साथ उनके समीकरणों को संभालना बेहद नाजुक काम है। इसके अलावा, चीन की इस समूह को एक श्पश्चिम–विरोधीश ब्लॉक बनाने की महत्वाकांक्षा भी किसी से छिपी नहीं है। ऐसे जटिल माहौल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने ब्रिक्स को श्पश्चिम–विरोधीश बनने से रोककर उसे श्गैर–पश्चिमश मंच के रूप में बनाए रखने में सफलता पाई है। भारत ने स्पष्ट किया है कि ब्रिक्स का उद्देश्य किसी देश या ब्लॉक के खिलाफ मोर्चा खोलना नहीं, बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज को बुलंद करना और एक न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था का निर्माण करना है।

भारत की आर्थिक ताकत का लोहा मानने के पीछे देश का डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और तकनीकी क्रांति एक बड़ा कारण है। भारत ने ब्रिक्स देशों के सामने अपने सफल श्इंडिया स्टैकश यानी यूपीआई, आधार और डिजीलॉकर जैसे स्वदेशी डिजिटल समाधानों को पेश किया है। आज जब विकसित देश भी डिजिटल भुगतान के महंगे और एकाधिकारवादी मॉडलों पर निर्भर हैं, तब भारत ने एक ऐसा लोकतान्त्रिक और समावेशी वित्तीय ढांचा खड़ा किया है जिसने करोड़ों लोगों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा है। ब्रिक्स सम्मेलन में भारत ने इन तकनीकों को अन्य विकासशील देशों के साथ साझा करने का जो प्रस्ताव रखा है, वह इन देशों के लिए गेम–चेंजर साबित हो सकता है।

ई–बाजार: अर्थव्यवस्था की नई चुनौती

– ललित गर्ग–

भारत में खरीदारी की दुनिया जिस तेजी से बदल रही है, वह केवल बाजार की शैली में परिवर्तन नहीं है, बल्कि उपभोक्ता व्यवहार, रोजगार, तकनीक, छोटे व्यापार और अर्थव्यवस्था की पूरी संरचना में हो रहे बदलाव का संकेत है। हाल में शोध परामर्श संस्था इन्फिसम की रिपोर्ट ने इस परिवर्तन को एक स्पष्ट आंकड़े में सामने रखा है। उसके अनुसार भारत का ई–बाजार 2024 के लगभग 125 अरब डॉलर से बढ़कर 2030 तक करीब 345 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। यानी छह वर्षों में लगभग तीन गुना विस्तार। इसके लिए लगभग 18.4 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर का अनुमान लगाया गया है। लेकिन इस आंकड़े को केवल बाजार की सफलता के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। असली प्रश्न यह है कि इतनी तेज वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, उपभोक्ता अधिकार, छोटे व्यापार और पर्यावरण के लिए किस तरह का भविष्य बनाएगी। ई–बाजार की अगली कहानी केवल अधिक बिक्री की नहीं, बल्कि अधिक विवेकपूर्ण और अधिक टिकाऊ विकास की होनी चाहिए।

ई–बाजार का सबसे बड़ा परिवर्तन यह है कि उसने दुकान को स्थान से निकालकर व्यक्ति की हथेली तक पहुंचा दिया है। पहले ग्राहक बाजार जाता था, अब बाजार ग्राहक के मोबाइल में पहुंच गया है। दुकान खुलने और बंद होने का समय समाप्त हो रहा है। भौगोलिक दूरी का महत्व घट रहा है और सुविधा खरीदारी का सबसे बड़ा आकर्षण बनती जा रही है। इसी कारण ऑनलाइन खरीदारी अब केवल महानगरों की सुविधा नहीं रही। छोटे शहर और कस्बे इसके नए केंद्र बन रहे हैं। हालिया अध्ययन के अनुसार नए प्रत्यक्ष–से–उपभोक्ता आदेशों का लगभग 66 प्रतिशत हिस्सा दूसरे और तीसरे स्तर के शहरों से आ रहा है। यह परिवर्तन भारत की आर्थिक संरचना के लिए विशेष महत्व रखता है। महानगरों के बाद अब छोटे शहरों का उपभोक्ता बाजार की अगली शक्ति बन रहा है। स्थानीय भाषा में सामग्री, क्षेत्रीय पसंद, छोटे व्यापारियों की डिजिटल उपस्थिति और कम लागत वाली आपूर्ति व्यवस्था आने वाले वर्षों में ई–बाजार के विस्तार को गति दे सकती है। इसलिए भविष्य का ई–बाजार केवल तकनीक का बाजार नहीं होगा, बल्कि भारत की विविध भाषाओं, संस्कृतियों और स्थानीय आवश्यकताओं को समझने वाला बाजार होगा।

इस बदलाव में नई पीढ़ी की भूमिका निर्णायक है। आज ऑनलाइन खरीदारों में नई पीढ़ी की हिस्सेदारी लगभग एक–तिहाई बताई जा रही है और अनुमान है कि 2030 तक यही वर्ग डिजिटल खर्च का सबसे बड़ा समूह बन सकता है। यह केवल उम्र का परिवर्तन नहीं है, यह उपभोग की मानसिकता का परिवर्तन है। नई पीढ़ी विकल्पों की तुलना करती है, मूल्य की जांच करती है, दूसरे ग्राहकों की राय पढ़ती है और सुविधा को बहुत महत्व देती है। उसके लिए खरीदारी केवल वस्तु प्राप्त करना नहीं, बल्कि समय बचाना भी है। यही मानसिकता त्वरित वाणिज्य को असाधारण गति दे रही है। कुछ वर्ष पहले कुछ मिनटों में सामान पहुंचाने की कल्पना असंभव लगती थी, आज यह महानगरों से निकलकर छोटे शहरों तक पहुंच रही है। अनुमान है कि 2030 तक त्वरित वाणिज्य का बाजार 65 से 70 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है और अगले पांच वर्षों में ई–बाजार की अतिरिक्त वृद्धि में इसका योगदान 45 से 50 प्रतिशत तक हो सकता है। इसके साथ छोटे स्थानीय भंडार केंद्रों की संख्या 2025 के लगभग 2,525 से बढ़कर 2030 तक करीब 7,500 होने का अनुमान है।

लेकिन यहां एक गंभीर प्रश्न भी खड़ा होता है–क्या हर वस्तु को कुछ मिनट में घर पहुंचाना वास्तव में प्रगति का अंतिम मानक है? यदि उपभोक्ता को पांच मिनट में सामान मिल जाए, लेकिन उस सुविधा के पीछे अत्यधिक पैकेजिंग, अधिक यातायात, अधिक ऊर्जा खपत, अस्थिर रोजगार और लगातार घाटे का व्यापार हो, तो ऐसी गति को कितने समय तक टिकाऊ कहा जा सकता है? इसलिए आने वाले समय में ई–बाजार की सफलता को केवल वितरण की गति से नहीं, बल्कि उसके सामाजिक और आर्थिक संतुलन से भी मापना होगा। प्रौद्योगिकी इस पूरी व्यवस्था को और गहराई से बदलने वाली है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ग्राहक की पसंद को समझकर उत्पाद सुझाएगी, संवाद आधारित खरीदारी ग्राहक को बातचीत के माध्यम से निर्णय लेने में सहायता देगी और आभासी परीक्षण से वस्त्र, सौंदर्य सामग्री तथा अन्य उत्पादों को खरीदने का अनुभव बदल सकता है। एक हालिया अध्ययन के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता और यंत्र–अधिगम 2030 तक खुदरा उत्पादकता में 35 से 37 प्रतिशत तक सुधार ला सकते हैं। इससे आगे एक और बड़ा परिवर्तन संभव है। आज ग्राहक स्वयं वस्तु खोजता है, कल कृत्रिम बुद्धिमत्ता उसके लिए खोज, तुलना और चयन का बड़ा हिस्सा कर सकती है। अर्थात बाजार में सबसे बड़ा प्रतिस्पर्धी केवल वह कंपनी नहीं होगी जिसके पास अधिक उत्पाद हैं, बल्कि वह होगी जो ग्राहक की आवश्यकता को उससे पहले समझ सके।

पुलिस को चकमा देकर गोंडा पहुंच गई पल्लवी पटेल

संवाददाता—गोंडा। निषाद पार्टी के जिला प्रचारक विनोद साहनी की हत्या के बाद राजनीति गर्म है। रविवार को पीड़ित परिवार से मिलने आ रहे आजाद समाज पार्टी के अध्यक्ष व सांसद चंद्रशेखर आजाद रावण को बाराबंकी में रोक लिया गया। अपना दल कमेरावादी की नेता व सिराथू विधायक पल्लवी पटेल पुलिस को चकमा देकर पीड़ित के घर पहुंच गईं। परसपुर के रेक्सडिया मल्लाहनपुरवा में विनोद साहनी के घर पहुंचीं पल्लवी पटेल ने प्रदेश में कानून व्यवस्था ध्वस्त होने का आरोप लगाते हुए पीड़ित परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी, मुआवजा, सुरक्षा, शस्त्र लाइसेंस दिलाने के साथ ही आरोपितों पर एनएसए लगाने की मांग की।

सिराथू विधायक पल्लवी पटेल रविवार सुबह 11.40 बजे को पुलिस को चकमा देकर विनोद साहनी के घर पहुंच गईं। पुलिस को उनके पहुंचने की सूचना मिली तो विनोद साहनी के घर पहुंच गए। करीब एक घंटे तक परिवार से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने मीडिया से कहा कि विनोद साहनी निषाद और मल्लाह समाज के लिए आवाज उठाते थे। जिस तरह उनकी हत्या की गई, उससे दलित, शोषित, आदिवासी और पिछड़े वर्ग के लोग अंदर तक डरे हुए हैं।

उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश में आज सीमाओं पर आतंकवादियों से ज्यादा खतरा श्जातंकवादियोंश से है। विधायक ने कहा कि संगठित अपराध और दिनदहाड़े हत्याओं के कारण परिवार उजड़ रहे हैं। सरकार हर बार सिर्फ प्रयास करने की बात कहकर अपनी जिम्मेदारी से बच रही है। उनका आरोप था कि सत्ता संरक्षित लोगों की सुनवाई होती है, जबकि पिछड़ों, दलितों और आदिवासियों की शिकायतों पर ध्यान नहीं दिया जाता। पल्लवी पटेल ने कहा कि विनोद कुमार साहनी ने घायल अवस्था में खुद आरोपियों के नाम बताए थे। उन्होंने दावा किया कि गोलू सिंह और आकाश सिंह के नाम विनोद की ओर से दी गई तहरीर में भी दर्ज हैं। विधायक ने कहा कि अगर आरोपियों को बचाने के लिए ऊपर से किसी तरह का दबाव आता है तो वह परिवार के साथ खड़ी रहेंगी और अपनी क्षमता के अनुसार न्याय की लड़ाई लड़ेंगी। उन्होंने कहा कि चार लोगों की गिरफ्तारी और दो अधिकारियों के निलंबन भर से परिवार को न्याय नहीं मिलेगा। उन्होंने कहा कि परिवार का एक सदस्य चला गया और पूरा परिवार बिखर गया है। सरकार को परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी, उचित मुआवजा और सुरक्षा देनी चाहिए। विनोद साहनी से जुड़े सोशल मीडिया पोस्ट के सवाल पर पल्लवी पटेल ने कहा कि अभिव्यक्ति की आजादी सभी को है।

उनका आरोप था कि जब पीड़ित और वंचित समाज अपने पक्ष में सोशल मीडिया पर पोस्ट करता है तो उसे अपराध की श्रेणी में लाने की कोशिश होती है, जबकि सदन में पिछड़ों, दलितों और आदिवासियों के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी होने पर भी कार्रवाई नहीं होती। उन्होंने कहा कि देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था जरूर कायम है, लेकिन न्याय व्यवस्था की जमीनी हकीकत कागजों से अलग दिखाई देती है। पीड़ित परिवार को सिर्फ अधिकारियों के निलंबन या आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं, बल्कि लंबे समय तक सुरक्षा और न्याय की गारंटी चाहिए। पल्लवी पटेल ने कहा कि विनोद की हत्या में जो भी लोग शामिल हैं, उन्हें बिना किसी दबाव और पक्षपात के गिरफ्तार कर जेल भेजा जाना चाहिए। उन्होंने आरोपियों पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून यानी एनएसए के तहत कार्रवाई की भी मांग की। साथ ही परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी, मुआवजा, सुरक्षा और असलहा देने की मांग रखी। विधायक ने कहा कि अगर आरोपितों को बचाने के लिए किसी स्तर से दबाव बनाया गया तो वह परिवार के साथ खड़ी होकर न्याय की लड़ाई लड़ेंगी। उन्होंने कहा कि उनका मकसद केवल गिरफ्तारी कराना नहीं, बल्कि ऐसे परिवार को न्याय और सुरक्षा दिलाना है, जिसने हत्या की घटना में अपना सदस्य खोया है।

400 छात्रों ने निकाली तिरंगा यात्रा, 40 ने लगाई तीन किमी मैराथन

संवाददाता—श्रावस्ती। आदि शक्ति मां पाटेश्वरी पब्लिक स्कूल तुलसीपुर के 400 विद्यार्थियों ने रविवार को भव्य तिरंगा यात्रा निकालकर देशभक्ति का संदेश दिया। यात्रा से पहले 40 विद्यार्थियों के लिए तीन किलोमीटर की मैराथन दौड़ भी आयोजित की गई। विद्यालय परिसर से शुरू हुई तिरंगा यात्रा में विद्यार्थी 200 मीटर लंबे और तीन मीटर चौड़े विशाल तिरंगे को थामे चल रहे थे। यात्रा बैरागी पुरवा, नई बाजार चौक, कलश चौराहा और देवीपाटन रोड होते हुए विद्यालय परिसर में पहुंचकर समाप्त हुई। इस दौरान विद्यार्थी भारत माता की जय, वंदे मातरम और जय मां पाटेश्वरी के नारे लगाते रहे। वहीं मैराथन दौड़ प्रतियोगिता विद्यालय से शुरू होकर भवानियापुर, नेशनल हाईवे स्थित रमवापुर और कलश चौराहे से होते हुए वापस विद्यालय पहुंची।

प्रधानाचार्य डॉ. डीपी सिंह ने कहा कि ऐसी गतिविधियों से बच्चों में देशभक्ति के साथ मानसिक और शारीरिक विकास को बढ़ावा मिलता है। कार्यक्रम में शिक्षक—शिक्षिकाओं ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। स्वास्थ्य विभाग की टीम एंबुलेंस के साथ मौजूद रही, जबकि सुरक्षा व्यवस्था प्रभारी निरीक्षक सुधीर कुमार सिंह की देखरेख में रही।

बिना परमिशन रोड शो निकालने पर एआईएमआईएम के यूपी अध्यक्ष शौकत अली समेत 50 पर एफआईआर

संवाददाता—श्रावस्ती। जिला मुख्यालय भिनगा में बिना अनुमति शनिवार सड़क पर शक्ति प्रदर्शन और रोड शो करना एआईएमआईएम नेताओं और कार्यकर्ताओं को भारी पड़ गया। पुलिस ने एआईएमआईएम के प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली, हाजी दद्दन खां समेत करीब 50—60 कार्यकर्ताओं के खिलाफ गंभीर धाराओं में एफआईआर दर्ज की है। पुलिस की कार्रवाई के बाद जिले के राजनीतिक गलियारों में हलचल तेज हो गई है। बसपा से निष्कासित नेता हाजी दद्दन खां को एआईएमआईएम की सदस्यता दिलाने के लिए शनिवार बड़ी संख्या में समर्थक और कार्यकर्ता जुटे थे। इसी दौरान काफिले के साथ शहर में रोड शो निकाला गया। पुलिस के अनुसार जुलूस/रोड शो के लिए आवश्यक अनुमति नहीं ली गई थी, जिसके बाद पुलिस ने कार्रवाई शुरू की। भिनगा कोतवाली के पास पहुंचने पर पुलिस ने काफिले को घेरकर सड़क पर ही रोक दिया। इसके बाद पुलिस अधिकारियों ने एआईएमआईएम प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली से काफी देर तक पूछताछ की। मौके पर पुलिस बल की मौजूदगी के बीच रोड शो को आगे बढ़ने से रोक दिया गया। हाल के दिनों में भाजपा और बसपा से जुड़े कई नेताओं और कार्यकर्ताओं ने एआईएमआईएम का दामन थामा है। हाजी दद्दन खां की पार्टी में एंट्री के दौरान जुटे समर्थकों की भीड़ को राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन के तौर पर देखा जा रहा था। हालांकि बिना अनुमति सड़क पर कार्यक्रम आयोजित करने पर पुलिस ने सख्त रुख अपनाया। एफआईआर दर्ज होने के बाद जिले की सियासत में चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। पुलिस की कार्रवाई को कानून व्यवस्था के उल्लंघन के खिलाफ सख्त संदेश के तौर पर देखा जा रहा है। पुलिस का कहना है कि सार्वजनिक मार्ग पर बिना अनुमति भीड़ जुटाकर यातायात व कानून व्यवस्था प्रभावित करने की स्थिति में नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। इस कार्रवाई के बाद पार्टी के नेताओं व समर्थकों के बीच भी चर्चा तेज है। वहीं पुलिस की एफआईआर ने जिले में नए सियासी समीकरणों को लेकर चल रही चर्चाओं को और हवा दे दी है।

डीएम ने गौ संरक्षण केंद्र का निरीक्षण किया, गोवंश को गुड़ खिलाया

संवाददाता—बहराइच। जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने रविवार को मिहींपुरवा तहसील के सेमरहना गांव में बने बड़े गौ संरक्षण केंद्र का निरीक्षण किया। उनके साथ मुख्य विकास अधिकारी सुनील कुमार धनवंता और अपर जिलाधिकारी अमित कुमार भी मौजूद थे। डीएम ने गोपूजन कर गोवंश को गुड़ और फल खिलाए। उन्होंने केंद्र की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजेश कुमार उपाध्याय ने बताया कि केंद्र में 397 गोवंश रखे गए हैं। इनमें 108 नर और 289 मादा गोवंश शामिल हैं। केंद्र पर 200 क्विंटल भूसा, सात क्विंटल पशु आहार और 40 किलो नमक मौजूद है।

डीएम ने निर्देश दिए कि बीमार गोवंश की लगातार निगरानी की जाए। उन्हें समय पर इलाज, विटामिन, मिनरल्स और टीकाकरण की सुविधा दी जाए। उन्होंने यह भी कहा कि सभी गोवंश के लिए नियमों के हिसाब से भूसा, दाना, चारा और हरा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जाए।

राजेश कुमार पाण्डेय ने गोबर के सही इस्तेमाल पर जोर दिया। उन्होंने महिला स्वयं सहायता समूहों को केंद्र से जोड़कर वर्मी कंपोस्ट, गोबर के कंडे और दूसरे उत्पाद बनाने के निर्देश दिए। डीएम ने समूहों को प्रशिक्षण और जरूरी सामान देने के लिए कहा। साथ ही इन उत्पादों की श्भरथापुरश नाम से ब्रांडिंग करने को भी कहा। उन्होंने सालभर हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए निर्देश दिए। इसके तहत फरवरी—मार्च में खाली रहने वाले खेतों के किसानों की पहचान कर उनसे करार के तहत हरा चारा खरीदने को कहा। डीएम ने केंद्र में लगे सीसीटीवी कैमरों को पूरी तरह से चालू रखने के निर्देश दिए। उन्होंने इंटरनेट और बिजली के वैकल्पिक इंतजाम, कमांड सेंटर से जोड़ने, प्रवेश द्वार से शेड तक पक्का रास्ता बनाने और गोबर गैस प्लांट के जनरेटर को चालू रखने के लिए भी कहा। इसके अलावा, सभी गोवंश की पूरी टैगिंग और लगातार निगरानी के निर्देश भी दिए गए।

राप्ती नदी में मिला सिद्धार्थनगर के युवक का शव

संवाददाता—महराजगंज। बृजमनगंज थाना क्षेत्र के बेलसर स्थित राप्ती नदी में रविवार को एक युवक का शव उतराता हुआ मिला। नदी से युवक का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी मच गई। बड़ी संख्या में ग्रामीण पहुंच गए। पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से शव निकलवाकर कार्रवाई शुरू की। पुलिस ने शव की पहचान कराई तो उसकी पहचान पड़ोसी जनपद सिद्धार्थनगर के थाना उसका बाजार स्थित शिवाजी नगर कर रहने वाला दुरविजय सहानी पुत्र सुखराज सहानी के रूप में हुई। सूचना पर पहुंचे परिजनों ने बताया कि दुरविजय सहानी चार दिन पहले घर से निकला था, जिसके बाद से ही वह लापता चल रहा था। पुलिस ने जरूरी कार्रवाई करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

एसओ मदन मोहन मिश्रा ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। रिपोर्ट आने के बाद मौत की वजह स्पष्ट हो सकेगी। पुलिस मामले में जरूरी जांच कर रही है।

हाफ से संतुष्ट नहीं, हत्यारोपी के फुल एनकाउंटर की मांग को लेकर प्रदर्शन

संवाददाता—देवरिया। भलुअनी में 10 सितंबर को हुई मनीष सिंह उर्फ मोनू की हत्या को गुस्साई भीड़ रविवार को एक बार फिर सड़क पर उतर आई और पुलिस को सांसत में डाल दिया। जबकि पुलिस ने इस मामले में मुख्य आरोपी चाइना अंसारी को रविवार की भोर में एक एनकाउंटर के बाद गिरफ्तार कर लिया है। एनकाउंटर में चाइना अंसारी के पैर में गोली लगी है। लोगों के बीच इसे हाफ एनकाउंटर बताते हुए असंतोष जताया जा रहा है और फुल एनकाउंटर की मांग की जा रही है। ऐसी मांग जिसकी इजाजत कानून नहीं देता, देवरिया पुलिस के लिए परेशानी का सबब बन गई। लोगों ने भलुअनी थाने का घेराव कर दिया और करीब दो घंटे तक हंगामा करते रहे। बाद में लोगों ने 24 घंटे का अल्टीमेटम देते हुए कहा कि यदि इस दौरान पुलिस ने बड़ी कार्रवाई नहीं की तो भलुअनी कस्बे के गांधी चौक पर जाम लगा देंगे। इस चेतावनी के साथ लोग थाने से लौट गए।

भलुअनी कस्बा के रहने वाले मनीष सिंह मोनू की गुरुवार की रात चाकू से गोद कर हत्या कर दी गई। आरोप है कि मोनू ने एक सितंबर को थाने पहुंचकर तहरीर देते हुए आरोपियों से अपनी जान—माल का खतरा बताया था लेकिन पुलिस ने इस पर ध्यान नहीं दिया। मनीष सिंह उर्फ मोनू की हत्या के बाद आक्रोशित लोगों ने 11 सितंबर को पोस्टमार्टम के बाद शव पहुंचते ही भलुअनी में सड़क जाम कर दिया था। मामले में पुलिस की लापरवाही सामने आने के बाद एसपी ने प्रभारी निरीक्षक राकेश राय, दारोगा और सिपाही को सस्पेंड कर दिया था।

रविवार की सुबह—सुबह खबर आई कि पुलिस ने इस मामले में मुख्य आरोपी चाइना अंसारी को एक एनकाउंटर में गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस का कहना है कि सोनाड़ी क्षेत्र में हथियार बरामदगी की कार्रवाई के दौरान चाइना ने एक दरोगा की पिस्टल छीन ली और पुलिस टीम पर हमला कर दिया। जवाबी फायरिंग में उसे पैर में गोली लगी। चाइना अंसारी को इलाज के लिए देवरिया के मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। वहीं मनीष सिंह उर्फ मोनू की हत्या के बाद से ही आक्रोशित लोगों को रविवार की सुबह जब यह सूचना मिली तो वे असंतुष्ट हो गए। लोगों का असंतोष इस बात पर है कि एनकाउंटर में आरोपी के पैर में गोली लगी। लोग आरोपी के फुल एनकाउंटर की मांग करते हुए थाने पहुंच गए। थानें में उन्होंने प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। लोगों ने कहा कि कि पहली बार तो पुलिस की लापरवाही से मोनू की हत्या हुई है। आरोपी ने जघन्य तरीके से घटना को अंजाम दिया है। एक बार नहीं, दो दर्जन से अधिक बार चाकू से प्रहार किया गया है। ऐसे जघन्य अंजाम देने वाले आरोपी को केवल पैर में गोली मारी गई है। जान का बदला जान होना चाहिए। हाफ एन्काउंटर हम लोगों को कबूल नहीं है। पुलिस फुल एनकाउंटर करे, तब ही हम लोग मानेंगे। उधर, लोगों की ऐसी मांग से देवरिया पुलिस सांसत में पड़ गई है। पुलिस अधिकारियों ने लोगों को समझाने की काफी कोशिश की कि हाफ या फुल कोई भी एनकाउंटर किसी की मांग या पुलिस की इच्छा से नहीं होता। अधिकारियों का कहना है कि पुलिस की पहली कोशिश आरोपी को पकड़कर कानून के सामने पेश करने की होती है ताकि अदालत उसके गुनाह का इंसाफ कर सके। कभी—कभी गिरफ्तारी के वक्त आरोपी पुलिस पर हमला कर देते हैं और आत्मरक्षा में पुलिस को मजबूरन गोलियां चलानी पड़ती हैं। तब भी पहली कोशिश आरोपी के पैर पर निशाना साधने की होती है ताकि उसे जिंदा गिरफ्तार किया जा सके। इस मामले में भी यही हुआ है। पुलिस ने चाइना अंसारी को एनकाउंटर में गिरफ्तार कर लिया है। उसे कानून के सामने पेश कर कानून के मुताबिक उसके किए की सजा दिलाई जाएगी। उधर, प्रदर्शन कर लोग पुलिस की कोई बात सुनने को तैयार नहीं थे। वे दो घंटे तक थाने पर प्रदर्शन और हंगामा करते रहे। पुलिस ने उन्हें आश्वासन दिया कि जल्द ही इस मामले में फरार चल रहे दो अन्य आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इस आश्वासन के बाद 24 घंटे का अल्टीमेटम देते हुए लोग अपने घरों को लौट गए।

कुर्मी समाज को नजरअंदाज करने वालों को समाज करेगा नजरअंदाज संगठन विस्तार कार्यक्रम हुआ, रविकर पटेल बने जिलाध्यक्ष

संवाददाता—देवरिया। अखिल भारतीय कूर्मि क्षत्रिय महासभा का संगठन विस्तार और सम्मान समारोह रविवार को दिन में 12 से चार बजे तक जिला पंचायत सभागार में हुआ। इसमें प्रदेश अध्यक्ष चौधरी शैलेन्द्र पटेल ने कहा कि कुर्मी समाज का कारवां लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने साफ कहा कि जो हमें राजनीति में नजरअंदाज करेगा, कुर्मी समाज उसे नजरअंदाज करेगा।

चौधरी शैलेन्द्र पटेल ने कहा कि आने वाले समय में समाज की राजनीति में मजबूत हिस्सेदारी होगी। समाज राजनीतिक दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाएगा। उन्होंने संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने और समाज के लोगों को एकजुट करने पर जोर दिया।

मुख्य वक्ता वरिष्ठ उपाध्यक्ष कैलाश उमराव ने बताया कि समाज की एकजुटता से राजनीतिक, शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक मजबूती बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि समाज की एकता प्रदेश में शांति और प्रेम का संदेश देगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षाता पूर्व एडिशनल डायरेक्टर जनरल जीएसटी वशिष्ठ चौधरी ने की। उन्होंने संगठन और राजनीति को अलग रखने की बात कही। उन्होंने युवाओं को संगठित करने और पंचायत स्तर तक संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया। साथ ही, जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए अभियान चलाने का आह्वान किया।

प्रदेश संगठन मंत्री रितेश सिंह पटेल ने कहा कि कुर्मी समाज को अभी अपनी संख्या के हिसाब से राजनीतिक हिस्सेदारी नहीं मिली है। इसके लिए समाज को राजनीतिक रूप से जागरूक और संगठित होना होगा। उन्होंने बताया कि इसी मकसद से पूर्वांचल में संगठन विस्तार की शुरुआत उनके गृह जनपद देवरिया से हुई है। उन्होंने दावा किया कि संगठन के विस्तार का असर 2027 में दिखेगा।

इस मौके पर डॉक्टर विवेक सिंह पटेल, पीयूष प्रियदर्शी, डॉक्टर ओमप्रकाश सिंह, बीएन सिंह और मथुरा भाई पटेल समेत बड़ी संख्या में समाज के लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्र बंधु रजनीश पटेल ने किया। समारोह में देवरिया की नई जिला कार्यकारिणी की घोषणा की गई। रविकर पटेल को जिलाध्यक्ष, विश्वकर्मा पटेल को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, रजनीश पटेल को महासचिव, हरेन्द्र पटेल को कोषाध्यक्ष तथा फूलबदन पटेल और संतोष पटेल को उपाध्यक्ष बनाया गया। कुमकुम पटेल एडवोकेट को महिला मोर्चा अध्यक्ष और पप्पू सिंह पटेल को युवा मोर्चा अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

गोरखपुर मंडल अध्यक्ष की जिम्मेदारी उदय प्रताप सिंह पटेल को दी गई। वहीं कुशीनगर में एडवोकेट तेज प्रताप सिंह पटेल को जिलाध्यक्ष, गणेश सिंह पटेल को महासचिव और तेज प्रताप पटेल को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया।

महिला ने नदी में लगाई छलांग, युवक ने खुद को जोखिम में डाल बचाई जान

संवाददाता—महराजगंज। धानी बाजार स्थित राप्ती नदी के पुल से रविवार को एक महिला के नदी में छलांग लगाने से हड़कंप मच गया। नदी के तट पर मौजूद एक युवक उसे बचाने के लिए नदी में कूद गया। साथ में मौजूद उसके दो साथी नाव लेकर पीछे से पहुंचे और तीनों ने महिला को सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

बृजमनगंज थाना क्षेत्र के ग्राम कोइलाडाड की एक महिला पारिवारिक विवाद के कारण रविवार को घर में बिना किसी को बताए धानी बाजार स्थित राप्ती नदी के पुल पर पहुंची। पुल से उसने नदी में छलांग लगा दी। इस दौरान ग्राम खड्खड़िया थाना कैम्पियरगंज— गोरखपुर निवासी श्रीचंद सहानी, अंशु और भोलू सहानी नदी तट पर मौजूद थे। इन युवकों ने से श्रीचन्द को डूब रही महिला दिखाई दी तो वह बिन देर किए नदी में कूद गया। श्रीचंद को नदी में कूदता देख उसके दोनों साथी बिन कुछ सोचे नाव लेकर पीछे चल पड़े। पुल से करीब पांच सौ मीटर दूर बड़ी मशक्कत के बाद महिला को बचा लिया। सूचना पर पहुंची पुलिस महिला को सीएचसी धानी लेकर पहुंची, जहां प्राथमिक इलाज के बाद महिला की पुलिस ने काउंसिलिंग की। पुलिस ने महिला को समझा—बुझाकर उसके परिजनों को सुपुर्द कर दिया।

सपा का पीडीए सम्मेलन, भाजपा पर साधा निशाना

संवाददाता—बलरामपुर। हरैया सतघरवा थाना क्षेत्र के उदयपुर खैरहनिया गांव में रविवार को पीडीए महासम्मेलन हुआ। यह सम्मेलन मां दुर्गा मंदिर परिसर में आयोजित किया गया। तुलसीपुर विधानसभा अध्यक्ष अरविंद कुमार यादव ने कार्यक्रम का संचालन किया। समाजवादी पार्टी छात्र सभा के प्रदेश अध्यक्ष विनीत कुशवाहा मुख्य अतिथि थे।

अध्यक्ष ने अपने संबोधन में भाजपा सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने भाजपा को झूठे वादे करने वाली और चुनावी वादे भूलने वाली पार्टी बताया। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि महंगाई से हर वर्ग परेशान है। खाद, गैस और तेल के दाम लगातार बढ़ रहे हैं।

विनीत कुशवाहा ने दावा किया कि जनता अब भाजपा के झूठे वादों में नहीं फंसेगी। उन्होंने कहा कि अगर अभी चुनाव हो जाएं, तो भाजपा खत्म हो जाएगी। उन्होंने आश्वासन दिया कि सपा सरकार बनने पर सभी को 300 यूनिट बिजली मुफ्त मिलेगी। साथ ही युवाओं को पक्की सरकारी नौकरी दी जाएगी।

उन्होंने यह भी वादा किया कि 2027 में सपा की सरकार बनते ही खैरहनिया खरझार पर पुल का निर्माण कराया जाएगा। इस सम्मेलन को पूर्व विधायक अब्दुल मकसूद खां, भानू त्रिपाठी, अक्षय श्रीवास्तव और विष्णु चौहान ने भी संबोधित किया।

मुख्य अतिथि ने बताया कि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने वरिष्ठ नेताओं को पीडीए विचारधारा से लोगों को जोड़ने की जिम्मेदारी दी है। इस मौके पर अशोक पटेल, विनय वर्मा, जुगुल किशोर पाल और दीप नरायन पटेल समेत कई लोग मौजूद थे।

ट्रेन से 30.23 लाख कैश बरामद, युवक दस्तावेज नहीं दिखा सका

संवाददाता—देवरिया। जीआरपी पुलिस ने रविवार को बैशाली एक्सप्रेस से एक युवक के बैग से 30 लाख 23 हजार 200 रुपये नकद बरामद किए। युवक बरामद रकम से संबंधित कोई वैध दस्तावेज पुलिस को नहीं दिखा सका। पुलिस ने कैश कब्जे में लेकर आयकर विभाग को सूचना दी है। रकम के स्रोत और उसे गोरखपुर ले जाने के मकसद की जांच की जा रही है। पुलिस के मुताबिक ट्रेन यात्रियों की सुरक्षा और अवैध कैश के परिवहन पर रोक लगाने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत रविवार को ट्रेन नंबर 15565 बैशाली एक्सप्रेस में देवरिया सदर से गोरखपुर जंक्शन तक चेकिंग की जा रही थी। करीब 3रू30 बजे चेकिंग के दौरान पुलिस को एक युवक संदिग्ध लगा। उसके बैग की तलाशी लेने पर नोटों की गड्डियां मिलीं। गिनती करने पर कुल 30 लाख 23 हजार 200 रुपये बरामद हुए। पूछताछ में युवक ने अपना नाम मुकेश शर्मा (21) पुत्र राजकुमार शर्मा बताया। वह राजस्थान के चूरू जिले के बीनादेसर गांव का रहने वाला है।

पुलिस के अनुसार, मुकेश ने बताया कि वह गोरखपुर में एक व्यक्ति को 30 लाख रुपये देने जा रहा था। उसने यह भी बताया कि वह अपने भाई के कहने पर अलग—अलग पार्टियों तक रकम पहुंचाता है और इसके बदले उसे कमीशन मिलता है। हालांकि, वह रकम के स्रोत या उसके लेनदेन से संबंधित कोई दस्तावेज पुलिस को नहीं दिखा सका। इसके बाद पुलिस युवक और बरामद कैश को जीआरपी थाना देवरिया ले आई। मामले की जानकारी उच्च अधिकारियों के साथ आयकर उपनिदेशक (जांच), गोरखपुर यूनिट को दी गई। पुलिस ने बरामद रकम को कब्जे में लेकर आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। आयकर विभाग भी रकम के स्रोत और लेनदेन से जुड़े तथ्यों की जांच कर रहा है।

देवरिया जीआरपी के प्रभारी निरीक्षक राजेशकुमार पाण्डेय ने बताया कि बरामद रकम के स्रोत और उसे गोरखपुर ले जाने के उद्देश्य की जांच की जा रही है। मामले में आयकर विभाग को भी जानकारी दी गई है और जांच जारी है।

तेंदुए के हमले में घायल मासूम की मौत

संवाददाता—महराजगंज। नानपारा कोतवाली क्षेत्र के खटकन पुरवा जुड़ा गांव में तेंदुए के हमले में घायल तीन साल की लाडो की लखनऊ में इलाज के दौरान मौत हो गई। घटना शनिवार देर रात हुई। रविवार सुबह जब शव गांव पहुंचा तो परिवार में मातम छा गया। पुलिस ने शव को अपने पास लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। वन विभाग ने पीड़ित परिवार को नियमानुसार आर्थिक सहायता देने की बात कही है। जानकारी के मुताबिक, यह घटना एक सप्ताह पहले रविवार शाम करीब सात बजे हुई थी। खटकन पुरवा जुड़ा गांव निवासी सीताराम की पत्नी अनीता घर के आंगन में नल पर पानी भर रही थीं। उनकी तीन साल की बेटी लाडो भी उनके पास खड़ी थी। तभी अचानक घर में घुसे एक तेंदुए ने लाडो पर हमला कर दिया। तेंदुआ उसे अपने जबड़े में दबाकर खेतों की ओर भाग निकला। बेटी को तेंदुए के मुंह में देखकर मां अनीता ने शोर मचाया। चीख—पुकार सुनकर आसपास के ग्रामीण लाठी—डंडे लेकर तेंदुए के पीछे दौड़ पड़े। ग्रामीणों के लगातार पीछा करने पर करीब 30 मिनट बाद तेंदुआ बच्ची को छोड़कर भाग गया। तेंदुआ घर से लगभग चार सौ मीटर दूर खेत में बच्ची को घायल हालत में छोड़कर भागा था। ग्रामीणों ने बच्ची को गंभीर हालत में बरामद कर परिजनों को सौंपा। परिजन तुरंत उसे नानपारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए। प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने बच्ची की गंभीर हालत देखकर उसे लखनऊ रेफर कर दिया था। लखनऊ में करीब एक सप्ताह से लाडो का इलाज चल रहा था। शनिवार देर रात इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मासूम की मौत से परिजनों का दुख गहरा गया है। इस घटना के बाद से गांव में डर का माहौल बना हुआ है। बहराइच के डीएफओ सुन्दरेसा ने बताया कि तेंदुए के हमले में घायल मासूम की मौत की जानकारी मिली है। वन विभाग की ओर से जरूरी कानूनी कार्रवाई की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलने के बाद नियमानुसार पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता दी जाएगी।

पुलिस मुठभेड़ में गोवंश वध का एक आरोपित घायल, बाएं पैर में लगी गोली

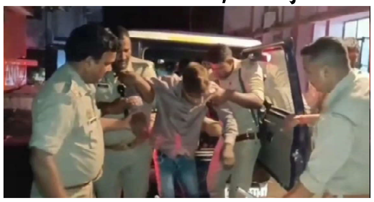

संवाददाता—संतकबीरनगर। धनघटा थाना क्षेत्र के मैली गांव में मांस के लिए बछड़े का वध करने के मामले में वांछित एक आरोपित को पुलिस ने रविवार देर रात मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार कर लिया गया। मुठभेड़ में पुलिस की जवाबी कार्रवाई में आरोपित के बाएं पैर में घुटने के नीचे गोली लगी है। घायल आरोपित को सीएचसी हैंसर ले जाया गया, वहां प्राथमिक उपचार के बाद जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया। जिला अस्पताल में उसका उपचार चल रहा है। एसपी संदीप कुमार मीना, एएसपी सुशील कुमार सिंह, सीओ धनघटा अभय नाथ मिश्रा व अन्य पुलिस अधिकारी ने अस्पताल पहुंचकर मामले की जानकारी ली। धनघटा क्षेत्र के खजूर टिकरा गांव निवासी अजय ने तहरीर देकर आरोप लगाया कि नौ सितंबर की रात करीब नौ बजे उसकी दादी और बहन मोहिनी छप्पर के बाहर लेटी बातचीत कर रही थीं। इसी दौरान मैली गांव के जहूर, सद्दाम और महबूब रस्सी खोलकर उसका नौ माह का बछड़ा ले जाने लगे। बहन के मना करने के बावजूद आरोपित बछड़े को उठा ले गए। तलाश के दौरान आरोपितों के सामने कुत्तों को मांस खाते देखा गया। तीनों ने बछड़े को काटकर मांस बेचने के लिए घर में रखा था। सूचना डायल 112 और धनघटा पुलिस को दी गई। 10 सितंबर को तीनों के खिलाफ गोवध निवारण अधिनियम व पशु क्रूरता अधिनियम में केस दर्ज हुआ था.

आरोप है कि तीनों उसे कुआनो नदी के किनारे ले गए और मांस के लिए काट दिया। बछड़े की मुंडी व अन्य अवशेष नदी में बहाने तथा मांस जहूर के घर पर रखने की बात सामने आई। मामले में पुलिस ने जहूर को 10 सितंबर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। वहीं, अन्य आरोपी की तलाश में जुटी थी। शनिवार की देर रात को सूचना मिली कि महबूब पुत्र नूर हसन उर्फ ढीमल कुआनो नदी के बंधे के रास्ते अपने घर से लौट रहा है और भागने की फिराक में है। सूचना पर एसओ धनघटा अजय कुमार सिंह और एसओजी प्रभारी रजनीश राय के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने मैली गांव के पास बंधे पर घेराबंदी की.

पुलिस से घिरता देख आरोपी महबूब ने गाली—गलौज और धमकी देते हुए जान से मारने की नीयत से पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। पुलिस कर्मियों ने आड़ लेकर बचाव किया और आत्मरक्षार्थ जवाबी फायरिंग की, जिसमें आरोपी महबूब के बाएं पैर के घुटने के नीचे गोली लगी। पुलिस टीम पर फायरिंग के मामले में हत्या के प्रयास, जान से मारने की धमकी देने और गाली—गलौज तथा आर्म्स एक्ट के तहत भी कार्रवाई की गई है। बताया कि आरोपी महबूब के पास से एक .315 बोर का तमंचा और एक खोखा व एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया।

गोरखपुर महायोजना 2031 पुनरीक्षित में दोबारा आपत्ति नहीं भरेंगे, पुराने प्रपत्रों पर हो कार्रवाई

संवाददाता—गोरखपुर। गोरखपुर महायोजना—2031 पुनरीक्षित में महादेव झारखंडी टुकड़ा नंबर—2, सिंघड़िया समेत आसपास के क्षेत्रों की तकरीबन 10 कॉलोनियों का भू—उपयोग आवासीय श्रेणी में शामिल करने की मांग रविवार को उठाई गई। सिंघड़िया के निजी मैरिजहॉल में हुई बैठक में लोगों ने स्पष्ट किया कि वे दोबारा गोरखपुर विकास प्राधिकरण को आपत्ति प्रपत्र नहीं देंगे। प्राधिकरण में पूर्व में जमा कराए गए आपत्ति प्रपत्रों के आधार पर ही शासन को भू—उपयोग बदलने का प्रस्ताव भेजे। बैठक अध्यक्षता कर रहे कामेश्वर सिंह ने कहा कि नए जीडीए उपाध्यक्ष अभिनव गोपाल ने इस मामले में नए सिरे से बैठक कर प्रस्ताव शासन को भेजने का आश्वासन दिया है। साथ ही नए सिरे से आपत्तियां मांगी हैं। कॉलोनीवासियों ने सर्वानुमति से कहा कि इस संबंध में पूर्व में ही आपत्तियां दर्ज कराई जा चुकी हैं, इसलिए पुराने अभिलेखों के आधार पर कार्रवाई होनी चाहिए। बैठक में वार्ड चार के पार्षद राजा यादव, वार्ड सात के पार्षद उपेंद्र सिंह (नन्हे सिंह), अयोध्या पांडे, दीनानाथ शर्मा, भरत सिंह, प्रभाकर पांडेय, मंदेव सिंह, सतेंद्र पांडेय, संजय सिंह बघेल, सुरेश सिंह, छेदी प्रसाद, इंद्रासन मिश्रा सहित बड़ी संख्या में मोहल्लेवासी और महिलाएं उपस्थित रहीं। मोहल्लेवासियों ने कहा कि महायोजना—2031 के संबंध में पूर्व में ही जीडीए में आपत्ति प्रपत्र जमा किए जा चुके हैं। इसलिए नए फॉर्म भरने के बजाय उन्हीं अभिलेखों के आधार पर प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजा जाए। बैठक में लोगों ने कहा कि यदि जीडीए स्तर पर सकारात्मक निर्णय नहीं हुआ तो वे मुख्यमंत्री से दोबारा मिलेंगे। जरूरत पड़ने पर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय की शरण लेने पर भी विचार किया जाएगा।

50वीं जूनियर बालक जोन सी ओपन स्टेट कबड्डी चैम्पियनशिप शुरू

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। पहल संस्थान के अध्यक्ष मनीष मिश्रा के नेतृत्व एवं पहल पर आयोजित 50वीं जूनियर बालक जोन सी ओपन स्टेट कबड्डी चैम्पियनशिप का बस्ती क्लब परिसर में भव्य शुभारंभ हुआ। प्रतियोगिता का उद्घाटन सतीश चन्द्र त्रिपाठी, संजय मिश्रा, और जीडी मिश्रा ने किया। दो दिवसीय डे—नाइट आयोजन में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से कुल 16 टीमें प्रतिभाग कर रही हैं। प्रतियोगिता के शुभारंभ से खिलाड़ियों में उत्साह का माहौल रहा और अतिथियों ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उनका उत्साहवर्धन किया।

इस अवसर पर संजय मिश्रा ने कहा कि मनीष मिश्रा का उद्देश्य केवल खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करना नहीं, बल्कि बस्ती की स्थानीय खेल प्रतिभाओं को उचित मंच उपलब्ध कराना है। उनका मानना है कि बस्ती को "बेस से स्पेस तक" ले जाने के लिए स्थानीय खेलों और स्थानीय खिलाड़ियों को बढ़ावा देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, लेकिन उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए बड़े और बेहतर मंच की जरूरत है। ऐसे आयोजन खिलाड़ियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

जीडी मिश्रा ने कहा कि मनीष मिश्रा के नेतृत्व में आयोजित यह प्रतियोगिता गांवों में छिपी खेल प्रतिभाओं को सामने लाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है। उन्होंने कहा कि प्रयास होना चाहिए कि गांवों में खेले जाने वाले खेल और वहां के प्रतिभाशाली खिलाड़ी केवल स्थानीय स्तर तक सीमित न रहें, बल्कि उन्हें जिला, प्रदेश, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने का अवसर मिले। कबड्डी जैसे पारंपरिक एवं लोकप्रिय खेल को बढ़ावा देकर युवाओं को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

विकास सिंह अध्यक्ष प्रदेश अध्यक्ष कबड्डी एसोसिएशन ने कहा कि खेल युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम है। इससे उनमें अनुशासन, टीम भावना, नेतृत्व क्षमता,

—बस्ती में 50वीं जूनियर बालक जोन सी ओपन स्टेट कबड्डी चैम्पियनशिप का भव्य शुभारंभ

—मनीष मिश्रा की पहल से गांव की खेल प्रतिभाओं को मिलेगा बड़ा मंच, जीडी मिश्रा व संजय मिश्रा ने की प्रयासों की सराहना

आत्मविश्वास और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होती है। मनीष मिश्रा की पहल से आयोजित यह प्रतियोगिता ग्रामीण एवं स्थानीय खिलाड़ियों को अपनी क्षमता प्रदर्शित करने का प्रभावी मंच प्रदान कर रही है।

कार्यक्रम में ओम पाण्डेय ने कहा कि मनीष मिश्रा जो कहते हैं, उसे करके दिखाते हैं। वह बस्ती के युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। बिना किसी पद और प्रोटोकॉल के समाजसेवा किस तरह की जाती है, इसे मनीष मिश्रा के कार्यों से सीखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि युवाओं को खेलों से जोड़ना और उनकी प्रतिभा को आगे बढ़ाने के लिए मंच उपलब्ध कराना समाजहित का महत्वपूर्ण कार्य है।

सतीश चन्द्र त्रिपाठी ने अन्य अतिथियों के साथ खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त करने के बाद कहा कि बस्ती में मनीष मिश्रा ने खेल एवं युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के क्षेत्र में एक लंबी रेखा खींच दी है, जो सराहनीय है। उन्होंने कहा कि इस दो दिवसीय डे—नाइट प्रतियोगिता में गोरखपुर, महाराजगंज, देवरिया, कुशीनगर, बलिया, मऊ, आजमगढ़, अयोध्या, बस्ती, अंबेडकर नगर, गोंडा, लखनऊ, सीतापुर, बाराबंकी, अमेठी हॉस्टल और सिद्धार्थनगर की कुल 16 टीमें प्रतिभाग कर रही हैं।

उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों एवं प्रतियोगिता से जुड़े सदस्यों के भोजन, पुरस्कार, खेल मैदान तथा उद्घाटन और समापन समारोह सहित आवश्यक व्यवस्थाओं को लेकर आयोजकों द्वारा व्यापक तैयारी की गई है। इस तरह के आयोजन युवाओं में खेल भावना, अनुशासन, टीमवर्क और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को मजबूत करते हैं।

प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों को अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर मिलेगा। आयोजन का उद्देश्य बस्ती और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी प्रतिभाओं को पहचान दिलाना तथा उन्हें बेहतर प्रशिक्षण एवं बड़े मंच की ओर आगे बढ़ाना है। आयोजकों का मानना है कि यदि स्थानीय खिलाड़ियों को लगातार अवसर मिलते रहें तो बस्ती के खिलाड़ी प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना सकते हैं।

प्रतियोगिता के शुभारंभ अवसर पर आलोक पाण्डेय, इस्तियाक हुसैन, ओम जी पाण्डेय, शिवेंद्र पाण्डेय एवं अमरेश पाण्डेय सहित अन्य लोग मौजूद रहे। अतिथियों ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए खेल भावना के साथ प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। आयोजन के दौरान खिलाड़ियों एवं खेलप्रेमियों में खासा उत्साह देखने को मिला।

साजिद के घर पहुंचा कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल, तीन दिन बाद दर्ज हुई गुमशुदगी की रिपोर्ट

संवाददाता—अम्बेडकरनगर। हंसवर थाना क्षेत्र के मुंडेरा गांव से 13 साल का साजिद लापता है। रविवार को कांग्रेस का 16 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल उसके परिवार से मिलने पहुंचा। जिला अध्यक्ष कृष्ण कुमार यादव के निर्देश पर जिला उपाध्यक्ष कुलदीप उपाध्याय की अगुवाई में नेताओं ने साजिद के पिता रहीस से बात की और घटना की जानकारी ली। जब कांग्रेस के नेता वहां पहुंचे, तो पुलिसकर्मी भी मौके पर मौजूद थे। कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया कि परिवार ने शिकायत दी थी, लेकिन पुलिस ने तुरंत गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज नहीं की। प्रतिनिधिमंडल के पहुंचने के बाद ही पुलिस ने रिपोर्ट लिखी और बच्चे की तलाश शुरू की। कांग्रेस ने कहा कि यह पुलिस के काम करने के तरीके पर सवाल उठाता है।

जिला उपाध्यक्ष कुलदीप उपाध्याय ने बताया कि टांडा कोतवाली क्षेत्र के रसूलपुर सकरावल गांव का रहने वाला 13 साल का रौनक भी 6 सितंबर से लापता है। उन्होंने आरोप लगाया कि रौनक के परिवार ने भी शिकायत दी थी, लेकिन स्थानीय पुलिस चौकी ने कई दिनों तक केस दर्ज नहीं किया। उन्होंने चौकी प्रभारी की भूमिका की जांच कर कार्रवाई की मांग की। कुलदीप ने यह भी कहा कि साजिद के परिवार ने 11 सितंबर की देर शाम थाने में शिकायत दी थी। अगर उसी समय रिपोर्ट दर्ज करके तलाश शुरू की जाती, तो बच्चे को जल्दी ढूंढा जा सकता था। उन्होंने आरोप लगाया कि जिले में मानव तस्करी का एक गिरोह सक्रिय है, हालांकि इसकी अभी तक कोई पुष्टि नहीं हुई है। कांग्रेस ने चेतावनी दी है कि अगर दोनों नाबालिग बच्चों को जल्द नहीं ढूंढा गया, तो वे आंदोलन करेंगे।

सांसद रत्न पुरस्कार के बाद पहली बार डुमरियागंज पहुंचे सांसद, लौहरौली बार्डर से डिंडई चौराहा तक जगह-जगह स्वागत

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। सांसद रत्न पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद डुमरियागंज के सांसद जगदंबिका पाल रविवार को पहली बार अपने संसदीय क्षेत्र पहुंचे। उनके पहुंचने पर लौहरौली बॉर्डर से लेकर डिंडई चौराहा तक जगह—जगह भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने उनका स्वागत किया। कार्यकर्ताओं ने फूल—मालाएं पहनाकर सांसद को सम्मानित किया और सांसद रत्न पुरस्कार मिलने पर बधाई दी। इस दौरान समर्थकों में खासा उत्साह नजर आया। सांसद जगदंबिका पाल के डुमरियागंज पहुंचने पर लौहरौली बॉर्डर से ही कार्यकर्ता और समर्थक स्वागत के लिए जुट गए। इसके बाद डिंडई चौराहा तक अलग—अलग स्थानों पर उनका स्वागत किया गया। समर्थकों ने सांसद को पुरस्कार मिलने पर बधाई और शुभकामनाएं दीं। कार्यकर्ताओं ने कहा कि सांसद जगदंबिका पाल को सांसद रत्न पुरस्कार मिलना केवल उनके लिए ही नहीं, बल्कि डुमरियागंज और सिद्धार्थनगर जिले के लिए भी गर्व का विषय है। समर्थकों ने कहा कि यह सम्मान क्षेत्र की उपलब्धि के रूप में भी देखा जा रहा है।

स्वागत के दौरान कार्यकर्ताओं ने सांसद की जनसेवा के प्रति

सक्रियता की सराहना की। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के विकास के लिए सांसद की सक्रियता और लोगों से लगातार जुड़ाव प्रेरणादायक है। कार्यकर्ताओं ने उम्मीद जताई कि सम्मान मिलने के बाद क्षेत्र के विकास से जुड़े कार्यों को और गति मिलेगी।

स्वागत कार्यक्रम के दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष शीतल सिंह और भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष दीपक मौर्य भी मौजूद रहे। उनके साथ भाजपा के कई पदाधिकारी, कार्यकर्ता और समर्थक भी पहुंचे। जगह—जगह कार्यकर्ताओं की मौजूदगी से स्वागत कार्यक्रम में उत्साह का माहौल रहा।

सांसद के पहुंचने पर समर्थकों ने उनका स्वागत करते हुए पुरस्कार मिलने पर बधाई दी। कार्यकर्ताओं ने कहा कि सांसद रत्न पुरस्कार डुमरियागंज की जनता के लिए भी गर्व की बात है। स्वागत के दौरान बड़ी संख्या में समर्थकों की भीड़ दिखाई दी और कार्यकर्ताओं ने सांसद को शुभकामनाएं दीं। कार्यकर्ताओं ने कहा कि सांसद रत्न पुरस्कार को 'जनसेवा का सम्मान, डुमरियागंज का गर्व' के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने सांसद के सम्मान को पूरे क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण बताया। स्वागत के दौरान भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता और समर्थक मौजूद रहे और सांसद के सम्मान पर खुशी जताई।

स्वच्छता ही सेवा में 157 घंटे चलेगा महासफाई अभियान

संवाददाता—गोरखपुर। नगर निगम क्षेत्र में 15 सितम्बर से 17 अक्तूबर तक 'स्वच्छता में सहभागिता, स्वच्छ भारत, विकसित भारत' की थीम पर 'स्वच्छता ही सेवा—2026' अभियान चलाया जाएगा। अभियान के तहत 25 सितम्बर से दो अक्तूबर तक शहर की सभी मलिन बस्तियों में 157 घंटे का सतत महासफाई अभियान चलेगा। अपर नगर आयुक्त प्रमोद कुमार ने अभियान को सफल बनाने के लिए जोनल अधिकारियों और सफाई निरीक्षकों को जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय कर गतिविधियां संचालित करने के निर्देश दिए हैं। 15 और 16 सितम्बर को महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव की अध्यक्षता में बैठकें होंगी। इसमें पोर्टल पर क्लीननेस टारगेट यूनिट चिह्नित करने के साथ उनकी सफाई की कार्य योजना तैयार होगी। 17 सितम्बर को अभियान के औपचारिक शुभारंभ के साथ वार्डों में श्रमदान, आरडब्ल्यूए और स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से विभिन्न स्वच्छता गतिविधियां होंगी। इसी दौरान 'स्वच्छ पाठशाला—युवा फॉर स्वच्छता' और सफाई मित्रों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए 'सफाई मित्र सुरक्षा शिविर' भी लगेंगे। 25—26 सितम्बर को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर 'क्लीन ग्रीन फेस्टिवल' के साथ धार्मिक स्थलों की सफाई होगी। 27 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस पर पर्यटन स्थलों पर प्लास्टिक बहिष्कार अभियान चलेगा। 28 और 29 सितम्बर को 'स्वच्छता से समृद्धि' के तहत कबाड़ से जुगाड़ (वेस्ट—टू—आर्ट), आरआरआर सेंटरों की सक्रियता और री—साइक्लिंग मेले लगाए जाएंगे। 01 अक्तूबर 'एक दिन, एक घंटा, एक साथ' के तहत वृहद जन—श्रमदान होगा। 02 अक्तूबर को उत्कृष्ट कार्य करने वाले सफाई मित्रों और स्वयं सहायता समूहों को सम्मानित किया जाएगा। 03 से 05 अक्तूबर तक पोखरों, तालाबों और घाटों की सफाई, 06 अक्तूबर को 'स्वच्छ कार्यालय' अभियान और 910 अक्तूबर को कचरा पृथक्कीकरण व होम कम्पोस्टिंग के लिए जागरूकता अभियान चलेगा। 11 से 17 अक्तूबर तक नवरात्रि के मद्देनजर 'स्वच्छ पर्व—हरित पर्व' के तहत पौधरोपण और विशेष सफाई अभियान चलाया जाएगा।

राम मंदिरः ज्वाइंट व डिप्टी सीईओ के लिए तीन–तीन नामों का पैनल तैयार, ट्रस्ट की मुहर का इंतजार

संवाददाता—अयोध्या। अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट मंदिर की प्रशासनिक व्यवस्था को नए सिरे से मजबूत करने की तैयारी में है। एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) जितेंद्र मिश्र के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) की जिम्मेदारी संभालने के बाद अब उनकी टीम के गठन की प्रक्रिया तेज हो गई है। ज्वाइंट सीईओ और डिप्टी सीईओ के पदों पर जल्द नियुक्ति किए जाने की तैयारी है। सूत्रों के अनुसार, दोनों पदों के लिए अलग—अलग श्रेणियों में तीन—तीन नामों का पैनल तैयार किया गया है। इनमें से एक—एक नाम पर अंतिम निर्णय लिया जाना है। ट्रस्ट महासचिव गोविंद देव गिरि की सहमति के बाद नामों पर अंतिम स्तर पर मंथन चल रहा है। माना जा रहा है कि दो दिसंबर को प्रस्तावित ट्रस्ट बैठक से पहले दोनों पदों के नाम तय हो सकते हैं। सीईओ की नई टीम में राम मंदिर निर्माण से जुड़े अनुभवी इंजीनियरों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देने पर भी विचार किया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक, संभावित नामों में ऐसे इंजीनियर शामिल हैं, जिन्होंने मंदिर निर्माण की तकनीकी और प्रबंधन संबंधी व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जन्माष्टमी के दौरान मंदिर निर्माण से जुड़े कुछ इंजीनियर ट्रस्ट के आमंत्रण पर अयोध्या पहुंचे थे। उन्होंने रामलला के दर्शन के बाद ट्रस्ट महासचिव गोविंद देव गिरि और कोषाध्यक्ष महेश भागचंदका से मुलाकात की थी। इसके बाद से ही इन मुलाकातों को ट्रस्ट की नई प्रशासनिक टीम के गठन से जोड़कर देखा जा रहा है। एयर मार्शल जितेंद्र मिश्र के सीईओ बनने के बाद अब उनके साथ काम करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों की टीम तैयार की जा रही है। इसमें प्रशासनिक, तकनीकी और प्रबंधन से जुड़े लोगों को शामिल किए जाने की संभावना है। ज्वाइंट सीईओ और डिप्टी सीईओ इसी टीम की महत्वपूर्ण कड़ी होंगे। नई व्यवस्था का उद्देश्य मंदिर निर्माण के अंतिम चरण, मंदिर परिसर की व्यवस्थाओं, श्रद्धालु सुविधाओं और भविष्य की परियोजनाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना बताया जा रहा है। ट्रस्ट स्तर पर चयन प्रक्रिया पूरी होने के बाद जल्द ही नई टीम की जिम्मेदारियां स्पष्ट होने की उम्मीद है।

महुलानी पीएचसी में मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेला, 20 मरीजों की जांच, मुफ्त दवाएं बांटीं

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। खेसरहा इलाके के महुलानी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर रविवार को मुख्यमंत्री जन आरोग्य स्वास्थ्य मेला लगाया गया। रविवार की छुट्टी के बावजूद स्वास्थ्य केंद्र पर मरीज पहुंचते रहे। मेले में आसपास के गांवों से आए कुल 20 मरीजों की जांच की गई। डॉक्टर ने मरीजों की बीमारी के अनुसार सलाह दी और जरूरत के मुताबिक मुफ्त दवाएं बांटी गईं। स्वास्थ्य विभाग का उद्देश्य ग्रामीणों को उनके आसपास ही शुरुआती जांच और इलाज की सुविधा उपलब्ध कराना रहा।

महुलानी पीएचसी पर सुबह से ही मरीजों के आने का सिलसिला शुरू हुआ। आसपास के गांवों से पहुंचे लोगों ने स्वास्थ्य मेले में अपनी समस्याएं बताईं। स्वास्थ्यकर्मियों ने मरीजों की शुरुआती जांच की और उनकी स्वास्थ्य स्थिति के अनुसार चिकित्सकीय सलाह दी। मेले में कुल 20 मरीजों का परीक्षण किया गया।

मेले में डॉ. इमरान ने मरीजों की जांच की। उन्होंने मरीजों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को समझने के बाद बीमारी के अनुसार जरूरी सलाह दी। स्वास्थ्यकर्मियों ने लोगों को छोटी स्वास्थ्य समस्या को नजरअंदाज नहीं करने और समय पर चिकित्सकीय परामर्श लेने के लिए जागरूक किया। डॉक्टर की सलाह के बाद मरीजों को जरूरत के अनुसार मुफ्त दवाएं उपलब्ध कराई गईं। फार्मासिस्ट राजेंद्र चौधरी ने दवा वितरण की जिम्मेदारी संभाली। ग्रामीणों के लिए एक ही जगह पर डॉक्टर की सलाह और दवा मिलना राहत भरा रहा। इससे उन्हें छोटी बीमारियों के लिए दूर के अस्पताल जाने से बचने का मौका मिला। मेले में लैब टेक्नीशियन विजय प्रकाश ने जांच संबंधी काम संभाला। स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्थाओं में स्वीपर गंगाधर, वार्ड ब्वॉय उदयभान और स्टाफ नर्स माधुरी सिंह ने भी जिम्मेदारी निभाई। स्वास्थ्यकर्मियों ने मरीजों की जांच, दवा वितरण और अन्य व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से संचालित किया। स्वास्थ्य विभाग की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे स्वास्थ्य मेले आयोजित करने का उद्देश्य लोगों को शुरुआती इलाज और स्वास्थ्य संबंधी सलाह उपलब्ध कराना है। खासकर बुजुर्गों, महिलाओं और जरूरतमंद परिवारों के लिए नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर जांच और दवा की सुविधा राहत देती है। इससे छोटी बीमारी के लिए दूर के अस्पताल जाने की जरूरत कम होती है।

स्वास्थ्यकर्मियों ने मरीजों को नियमित स्वास्थ्य जांच कराने, साफ—सफाई रखने और पौष्टिक भोजन लेने की सलाह दी। मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए सावधानी बरतने पर भी जोर दिया गया। कर्मचारियों ने कहा कि बीमारी के लक्षण दिखने पर इलाज में देरी नहीं करनी चाहिए। महुलानी पीएचसी पर लगे मेले में 20 मरीजों की जांच और मुफ्त दवा वितरण के जरिए ग्रामीणों तक स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने का प्रयास किया गया।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 65,724 मामलों का निपटारा

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती में शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। अलग—अलग न्यायालयों, ग्राम न्यायालयों, तहसीलों, राजस्व न्यायालयों और कलेक्ट्रेट में कुल 65,724 मामलों का सुलह—समझौते के आधार पर निपटारा किया गया। इस दौरान 5,92,39,413 रुपए की वसूली भी हुई। राष्ट्रीय लोक अदालत में परिवार न्यायालय के 51 मामलों का निस्तारण किया गया। इनमें 14 दंपती ऐसे रहे, जिन्होंने आपसी विवाद खत्म कर फिर से साथ रहने का फैसला किया। बस्ती मंडल के प्रशासनिक न्यायमूर्ति राम मनोहर नारायण मिश्र ने इन दंपतियों को बधाई दी और सुखमय वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएं दीं। सुलह के बाद दंपतियों ने एक—दूसरे को माला पहनाई। राष्ट्रीय लोक अदालत का उद्घाटन प्रशासनिक न्यायमूर्ति राम मनोहर नारायण मिश्र ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इसके बाद उन्होंने परिवार न्यायालय का निरीक्षण भी किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव देवेंद्र कुमार—प्रथम ने बताया कि मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण में 111 मामलों का निपटारा हुआ। इनमें 41,11,70,000 रुपए की क्षतिपूर्ति दिलाई गई। भूमि अर्जन, पुनर्वास एवं पुनर्व्यवस्थापन प्राधिकरण का एक मामला और उपभोक्ता फोरम के 67 मामलों का भी निस्तारण किया गया। अलग—अलग न्यायालयों से कुल 3,186 मामलों का निपटारा हुआ, जबकि प्री—लिटिगेशन स्तर पर 62,538 मामलों को सुलह—समझौते के आधार पर निपटाया गया। इस मौके पर प्रशासनिक न्यायमूर्ति ने बार पदाधिकारियों और न्यायिक अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने न्यायिक कार्य में पारदर्शिता बनाए रखने और समय से न्यायालय पहुंचने के निर्देश दिए।उन्होंने उच्चतम न्यायालय के निर्धारित फॉर्मेट के अनुसार फैसले लिखने तथा साक्ष्यों के मूल्यांकन और फैसले के निष्कर्ष पर विशेष ध्यान देने को कहा। लोक अदालत परिसर में जिला जेल के कैदियों द्वारा तैयार किए गए हस्तशिल्प की प्रदर्शनी भी लगाई गई। इसके अलावा 'एक जिला—एक उत्पाद' योजना के तहत तैयार उत्पादों को भी प्रदर्शित किया गया।

दैनिक भारतीय बस्ती

संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1—4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक—**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक—**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**

अयोध्या—फैजाबाद कार्यालय—
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या—फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय—
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय—
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल **bhartiyabasti@gmail.com**
dainikbhartiyabasti@gmail.com